हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार 19 अप्रैल 2026

9 नशा व्यक्ति ही नहीं बल्कि पूरे परिवार को कर देता है खोखला

10 11वें दिन भी जारी रही फायर ब्रिगेड की हड़ताल

खबर संक्षेप

फर्जी पेमेंट दिखाकर ठगी करने पर दो आरोपी काबू

फतेहाबाद। पेट्रोल पंप पर फर्जी ऑनलाइन पेमेंट का झांसा देकर डीजल डलवाने वाले गिरोह के खिलाफ कार्रवाई करते हुए थाना सदर रतिया पुलिस ने दो युवकों को काबू किया है। आरोपियों की पहचान होशियार सिंह निवासी फतेहाबाद और राहुल उर्फ भोला निवासी भूना के रूप में हुई है। मामले की जानकारी देते हुए थाना सदर रतिया के प्रभारी निरीक्षक प्रहलाद सिंह ने बताया कि रिटोल किसान सेवा केंद्र, गुरूसर के मैनेजर अनूप कुमार की शिकायत कार्रवाई की गई।

हेरोइन तस्करी का मुख्य सप्लायर गिरफ्तार

फतेहाबाद। नशा तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत थाना शहर फतेहाबाद के अंतर्गत गुरुनानकपुरा चौकी पुलिस ने हेरोइन तस्करी के मामले में मुख्य सप्लायर को गिरफ्तार कर उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। इस मामले में पुलिस पहले ही एक आरोपी को गिरफ्तार कर चुकी थी, जिसकी निशानदेही पर सप्लायर की गिरफ्तारी मुमकिन हो पाई।

अवैध पिस्तौल के साथ युवक गिरफ्तार

फतेहाबाद। थाना जाखल पुलिस ने गश्त के दौरान एक युवक को काबू कर उसके कब्जे से एक अवैध पिस्तौल बरामद की है। थाना जाखल प्रभारी उपनिरीक्षक सुरेश कुमार ने बताया कि पुलिस टीम कानून-व्यवस्था और सुरक्षा के मद्देनजर जाखल क्षेत्र में रेलवे पुल के पास गश्त पर तैनात थी। इसी दौरान घेराबंदी कर आरोपी को काबू कर लिया।

नशा बेचकर बनाए आलीशान मकान व गाड़ियां भी छिनेंगी

नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस का डबल एक्शन

5 नशा तस्करों की 1.5 करोड़ की संपत्ति जब्त

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

जिले में नशा तस्करी के जिले में नशा तस्करी के खिलाफ फतेहाबाद पुलिस का अभियान निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया है। पुलिस ने 'डबल एक्शन' रणनीति के तहत तस्करों को जेल भेजने के साथ उनकी अवैध संपत्तियों को भी जब्त करना शुरू किया है। इसी कड़ी में पुलिस ने 5 कुख्यात तस्करों की लगभग 80 लाख रुपये की संपत्ति को फ्रीज किया है, जिसकी वर्तमान बाजार कीमत 1.5 करोड़ रुपये से अधिक है। पुलिस अधीक्षक निकिता खट्टर और एएसपी दिव्यांशी सिंगला के नेतृत्व में अब तक 6 तस्करों की करोड़ों की संपत्ति जब्त की जा चुकी है। सीआईए टोहाना ने तस्कर जगसीर सिंह उर्फ जग्गा के खिलाफ कार्रवाई की, जिसके कब्जे से 4 किलो हेरोइन बरामद हुई थी। उसकी संपत्तियां वैध आय से कई गुना अधिक पाई गईं। इसी तरह दूसरे मामले में राकेश कुमार उर्फ कालू को अल्प्राज़ोलम टैबलेट्स के साथ गिरफ्तार किया गया और

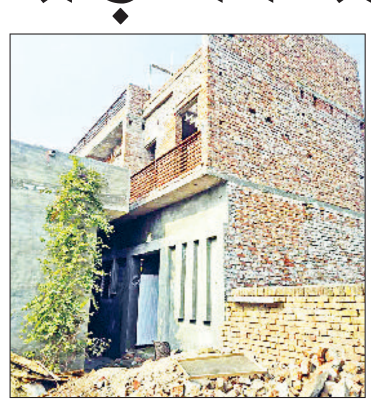

फतेहाबाद। नशा तस्कर की फ्रीज की गई संपत्ति।

उसकी 60 हजार की मोटरसाइकिल फ्रीज की गई। थाना सदर क्षेत्र के बच्चन सिंह के मामले में चूरापोस्त बरामद होने के बाद उसकी 20 लाख कीमत का मकान और 1.60 लाख की दो मोटरसाइकिलें फ्रीज की गईं। नशा बेचकर बनाए आलीशान मकान व गाड़ियां को भी छीना जाएगा।

तीन मोटरसाइकिल की जब्त

एक अन्य मामले में थाना शहर टोहाना क्षेत्र में नशा तस्करी के मामले में आरोपी विजय से हेरोइन बरामद की थी। इस मामले में विजय से पूछताछ के आधार पर कुलदीप सिंह उर्फ मंग्गू का नाम सामने आया। जांच में स्पष्ट हुआ कि कुलदीप तस्करी के नेटवर्क का अहम हिस्सा था। पुलिस ने उसका मकान जिसकी कीमत करीब 20 लाख रुपये है, के अलावा और 1.80 लाख रुपये के तीन मोटरसाइकिलों को फ्रीज किया।

सेफमा की अनुमति से कार्रवाई

एएसपी दिव्यांशी सिंगला ने जानकारी दी कि इन सभी मामलों में एनडीपीएस अधिनियम की धारा 68-एफ(1) के तहत जांच की गई थी। इसके बाद नई दिल्ली स्थित सेफमा से स्वीकृति प्राप्त कर संपत्तियों को फ्रीज किया गया है। अब इन संपत्तियों को बिना अनुमति न तो बेचा जा सकता है और न ही किसी अन्य के नाम हस्तांतरित किया जा सकता है। एएसपी ने स्पष्ट संदेश देते हुए कहा कि फतेहाबाद पुलिस नशे के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर काम कर रही है।

लोन कंपनी ने सील किया मकान, पंचायत के बाद ताला तोड़ा

- किसान और मजदूरों ने ताला खुलवाने के लिए दिया था धरना

हरिभूमि न्यूज ⏭ चोपटा

क्षेत्र के गांव अरनियांवाली में लोन की किशत नहीं चुकाने पर मकान के लगा ताला खुलवाने के लिए राजस्थान व हरियाणा के किसानों ने दूसरे दिन महापंचायत कर घर का ताला खोल दिया। और सुभाष के परिवार को 70 दिन बाद घर के अंदर प्रवेश करवाया। महापंचायत में

सिरसा। गांव अरनियांवाली में महापंचायत में भाग लेते किसान प्रतिनिधि तथा पंचायत के बाद तोड़ा गया गेट का ताला। *फोटो: हरिभूमि*

किसान नेताओं सहित हजारों किसानों ने पंचायत में निर्णय लिया कि घर का ताला खोलकर परिजनों को घर में प्रवेश करवाना चाहिए।

क्या है पूरा मामला

जानकारी के अनुसार अरनियांवाली निवासी मुकेश धर्मपत्नी सुभाष चंद्र दोनों पति-पत्नी ने इंडिया सेल्टर होम लोन कंपनी से करीबन 11.50 लाख का वर्ष 2024 में होम लोन लिया हुआ था। कंपनी ने दस लाख रुपये की किशत के लिए लोन दिया। इसकी किशत 17000 के लगभग बनती थी। इंडिया सेल्टर होम लोन ने लोन कि कुछ समय से किशत नहीं चुकाने पर 7 फरवरी 2026 को घर के ताला लगा दिया। इससे परिवार के लोगों को परेशानी झेलनी पड़ी। इसी मामले को लेकर दो दिन से किसान मजदूरों ने घर का ताला खुलवाने के लिए धरना दिया।

बिजली ट्रांसफार्मर से टकराई स्कूल वैन

- बाल-बाल बची 45 बच्चों की जान, ग्रामीणों ने दिखाया साहस

हरिभूमि न्यूज ⏭ रतिया

क्षेत्र के गांव लाली में शनिवार सुबह एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। एक निजी स्कूल की वैन अनियंत्रित होकर गली के मोड़ पर लगे बिजली के ट्रांसफार्मर से जा टकराई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि वैन के टायरों से अचानक धुआं और चिंगारियां निकलने लगीं। इस दौरान वैन में करीब 45 बच्चे सवार थे, जिससे मौके पर चीख-पुकार मच गई। हालांकि, ग्रामीणों की तत्परता और सूझबूझ के चलते सभी बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। गांव के प्रदीप, पवन, कश्मीर व

रतिया। गांव लाली में ट्रांसफार्मर के पास से गुजरती दूसरे स्कूल की वैन।

अन्य ग्रामीणों ने बताया कि उनके गांव से हर रोज अलग-अलग निजी स्कूल की वैन गांव के करीब 60-70 स्कूली बच्चों को लेकर स्कूलों में जाती है। शनिवार को स्कूली बच्चों को लेकर वैन जैसी ही जाने लगी तो आगे तूड़ी से भरे हुए दो ट्रैक्टर ट्राली की वजह से रास्ता संकरा हो गया था और वैन चालक ने एक साइड से वैन निकालने का प्रयास किया। इसी दौरान वैन ट्रांसफार्मर से टकरा गई।

ट्रांसफार्मर हटाने की मांग

घटना की सूचना मिलते ही स्कूल प्रबंधन और बिजली निगम के कर्मचारी भी मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों ने सख्त लहजे में कहा कि आज तो बच्चों की जान बच गई, लेकिन यदि भविष्य में कोई अनहोनी होती है, तो इसका जिम्मेदार कौन होगा। ग्रामीणों ने मांग की है कि इस ट्रांसफार्मर को तुरंत यहां से हटाकर सुरक्षित स्थान पर स्थानांतरित किया जाए और लापरवाही बरतने वाले संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाए। फिलहाल, सभी बच्चे सुरक्षित अपने घर पहुंच चुके हैं, लेकिन इस हादसे ने स्कूल बस चालकों की सावधानी और बिजली विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

टक्कर के तुरंत बाद बस के टायरों से धुआं और चिंगारियां निकलने लगी। हालांकि मौके पर मौजूद ग्रामीणों व अभिभावकों ने समय रहते बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

परशुराम जन्मोत्सव पर कार्यक्रम आज

सिरसा। श्री ब्राह्मण सभा द्वारा भगवान श्री परशुराम जन्मोत्सव व अक्षय तृतीया समारोह 19 अप्रैल को मनाया जाएगा। सभा के प्रधान अर्जुन शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम में मुख्यातिथि चेयरमैन हरियाणा बीज विकास निगम देव कुमार शर्मा जबकि विशिष्ठ अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष यतींद्र सिंह एडवोकेट, वरिष्ठ भाजपा नेता जगदीश चोपड़ा शामिल होंगे। वहीं मुख्य डेरा बाबा भूमणशाह के गद्दीनशीन संत बाबा ब्रह्मदास मुख्य रूप से कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। उन्होंने बताया कि आगामी 19 अप्रैल को सुबह 7.30 बजे श्री गीता भवन मंदिर में हवन यज्ञ किया जाएगा।

सुबह 7.30 बजे श्री गीता भवन मंदिर में हवन होगा

2 किलो 100 ग्राम गांजा सहित तस्कर गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

नशा तस्करों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत सीआईए रतिया पुलिस ने कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को काबू कर उसके कब्जे से 2 किलो 100 ग्राम गांजा बरामद किया है। सीआईए रतिया प्रभारी उपनिरीक्षक प्रदीप कुमार ने बताया कि पुलिस टीम गुप्त सूचना के आधार पर फतेहाबाद बाईपास टी-पॉइंट माजरा मोड़ के पास मौजूद थी। सूचना के अनुसार एक युवक नशीला पदार्थ बेचने के उद्देश्य से वहां खड़ा था। सूचना

अभियान के तहत सीआईए पुलिस की कार्रवाई

गांजा सहित पकड़ा गया युवक।

पुख्ता होने पर पुलिस टीम ने तुरंत कार्रवाई करते हुए बताए गए स्थान पर दबिश दी। मौके पर एक युवक संदिग्ध अवस्था में सफेद रंग का बैग लिए खड़ा दिखाई दिया, जो पुलिस को देखकर घबराने लगा।

गिरते बाजार में धैर्य ही सबसे बड़ा हथियार

सुझाव | बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव कोई नई बात नहीं है, लेकिन जब गिरावट तेज होती है तो निवेशकों का धैर्य डगमगाने लगता है। हाल के दिनों में वैश्विक स्तर पर बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, खासकर पश्चिम एशिया में हालात और कच्चे तेल की कीमतों में उछाल ने बाजार को अस्थिर बना दिया है। ऐसे माहौल में कई निवेशक घबराकर अपने निवेश से बाहर निकलने या एसआईपी (सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) बंद करने का फैसला कर लेते हैं। हालांकि, जानकारों का कहना है कि इस तरह के फैसलों को निवेश के लिए नुकसानदेह मानती हैं। उनका स्पष्ट कहना है कि बाजार की गिरावट के समय घबराहट में लिया गया निर्णय अक्सर लंबी अवधि के रिटर्न को कमजोर कर देता है।

एसआईपी रोकना क्यों हो सकता है नुकसानदायक

गिरते बाजार में एसआईपी बंद करना निवेशकों की सबसे बड़ी भूल होती है। एसआईपी का मूल उद्देश्य ही बाजार की अस्थिरता का फायदा उठाना है। जब बाजार गिरता है, तो निवेशक कम कीमत पर अधिक यूनिट्स खरीद पाते हैं। यही प्रक्रिया "कॉस्ट एवरेजिंग" कहलाती है, जो लंबे समय में बेहतर रिटर्न देने में मदद करती है। यदि निवेशक गिरावट के समय एसआईपी रोक देते हैं, तो वे इस कॉस्ट एवरेजिंग के लाभ से वंचित हो जाते हैं। यही कारण है कि एक्सपर्ट्स हमेशा सलाह देते हैं कि एसआईपी को एक अनुशासित आदत की तरह जारी रखा जाए, न कि बाजार के मूड के हिसाब से चलाया जाए।

एकमुश्त निवेशकों के लिए एसटीपी का विकल्प

जो निवेशक एकमुश्त रकम निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए अदिति ने एसटीपी (सिस्टेमैटिक ट्रांसफर प्लान) को बेहतर विकल्प बताया है। एसटीपी के जरिए निवेशक अपनी बड़ी राशि को धीरे-धीरे इक्विटी में ट्रांसफर कर सकते हैं। इससे बाजार के उतार-चढ़ाव का जोखिम कम होता है और निवेश अधिक संतुलित तरीके से होता है। यह रणनीति खासतौर पर उन निवेशकों के लिए उपयोगी है जो बाजार के सही समय को लेकर असमंजस में रहते हैं।

जियोपॉलिटिकल तनाव का असर

मौजूदा गिरावट के पीछे प्रमुख कारण वैश्विक अनिश्चितता है। पश्चिम एशिया में तनाव और तेल की कीमतों में तेजी ने निवेशकों की भावनाओं को प्रभावित किया है। हालांकि, अदिति का मानना है कि इस तरह की गिरावट आमतौर पर अल्पकालिक होती है। जब तक ये घटनाएं वैश्विक व्यापार, सप्लाई चेन या ऊर्जा आपूर्ति को बड़े स्तर पर प्रभावित नहीं करतीं, तब तक इक्विटी बाजार का दीर्घकालिक ट्रेंड नहीं बदलता। बाजार फिलहाल वास्तविक कॉर्पोरेट कमाई के बजाय खबरों और अनिश्चितता पर प्रतिक्रिया दे रहा है, जो समय के साथ सामान्य हो जाती है।

फाइनेंशियल सेक्टर में अवसर

मौजूदा परिस्थितियों में अदिति कोठारी देसाई बैंकिंग और फाइनेंशियल सेक्टर को लेकर आशावादी नजर आती हैं। उनका कहना है कि प्राइवेट बैंक, इंश्योरेंस व हाउसिंग फाइनेंस कंपनियां इस समय आकर्षक वैल्युएशन पर उपलब्ध हैं। विशेष रूप से निफ्टी प्राइवेट बैंक इंडेक्स एक दशक के सबसे निचले वैल्युएशन के करीब ट्रेड कर रहा है। इसका मतलब है कि मजबूत व गुणवत्ता वाले शेयर अपेक्षाकृत सस्ते मिल रहे हैं। ऐसे समय में धैर्य रखने वाले निवेशकों के लिए सुनहरा अवसर बन सकता है।

अनुशासन व धैर्य ही सफलता

निवेश की दुनिया में सबसे बड़ा सबक यही है कि भावनाओं के बजाय रणनीति के आधार पर निर्णय लिए जाएं। बाजार का गिरना या चढ़ना एक चक्र का हिस्सा है। जो निवेशक इन उतार-चढ़ावों के दौरान भी अनुशासन बनाए रखते हैं, वही लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न हासिल करते हैं। अदिति का संदेश साफ है हेडलाइंस और शॉर्ट-टर्म मूवमेंट्स को देखकर घबराने की जरूरत नहीं है। बल्कि ऐसे समय में अपने निवेश प्लान पर टिके रहना ही समझदारी है।

लॉन्ग टर्म निवेशकों के लिए मौका

इतिहास गवाह है कि बाजार में हर बड़ी गिरावट के बाद रिकवरी भी आती है। जो निवेशक गिरावट के समय निवेश जारी रखते हैं, वे रिकवरी के समय सबसे अधिक लाभ कमाते हैं। इसलिए, मौजूदा बाजार की अस्थिरता को खतरे के बजाय अवसर के रूप में देखना चाहिए।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- इक्विटी, डेट और गोल्ड के सही संतुलन से बनाएं सुरक्षित और ग्रोथ-ओरिएंटेड पोर्टफोलियो
- सफल निवेश के लिए अपनाएं बैलेंस, डिसिप्लिन और सही एसेट एलोकेशन

एसेट एलोकेशन, एसआईपी और लिक्विडिटी प्लानिंग से पाएं स्थिर रिटर्न, रिटर्न के पीछे भागने के बजाय अपनाएं संतुलित और अनुशासित निवेश रणनीति

उतार-चढ़ाव भरे बाजार में समझदारी से करें निवेश

नया वित्तीय वर्ष ऐसे समय में शुरू हो रहा है जब बाजार लिक्विडिटी-ड्रिवन तेजी के दौर से निकलकर एक अधिक चुनिंदा और उतार-चढ़ाव भरे फेज में प्रवेश कर चुका है। पिछले कुछ वर्षों में इक्विटी बाजार ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिए, लेकिन वित्त वर्ष 27 का परिदृश्य अलग नजर आ रहा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था अभी भी असमान गति से बढ़ रही है, महंगाई में कमी आई है लेकिन यह पूरी तरह नियंत्रित नहीं हुई है, और ब्याज दरों में तेजी से गिरावट की संभावना भी कम है। ऐसे माहौल में भारतीय निवेशकों के सामने अवसर तो हैं, लेकिन सफलता के लिए रणनीति में बदलाव जरूरी है। यह समय अंधाधुंध रिटर्न के पीछे भागने का नहीं, बल्कि सोच-समझकर, संतुलित और अनुशासित निवेश करने का है।

> वित्त वर्ष 27 ऐसा वर्ष हो सकता है जहां बाजार निवेशकों की समझ और धैर्य की परीक्षा लेगा। यह समय आक्रामक या बिना योजना वाले निवेश का नहीं है। जो निवेशक संतुलन, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन पर ध्यान देंगे, वही लंबी अवधि में सफल होंगे।

इस साल अपनाए जाने वाले 7 अहम निवेश मंत्र

1. अपने वित्तीय लक्ष्यों की दोबारा समीक्षा करें

अक्सर निवेशक एक बार लक्ष्य तय कर लेते हैं और फिर उसे बदलते नहीं, जबकि समय के साथ परिस्थितियां बदलती रहती हैं। आय, जिम्मेदारियां और बाजार की स्थिति इन सबका असर निवेश पर पड़ता है। अगर आपका कोई लक्ष्य 2–3 साल में पूरा होना है, तो ज्यादा इक्विटी निवेश जोखिम भरा हो सकता है। वहीं, लंबी अवधि के लक्ष्यों जैसे रिटायरमेंट या वेल्थ क्रिएशन के लिए इक्विटी अब भी उपयुक्त विकल्प है। इसलिए निवेश का ढांचा लक्ष्य की समयसीमा के अनुसार तय करना जरूरी है।

2. एसेट एलोकेशन को संतुलित रखें

आज के समय में सबसे बड़ा जोखिम बाजार का उतार-चढ़ाव नहीं, बल्कि एक ही एसेट क्लास में अत्यधिक निवेश है। कई पोर्टफोलियो अनजाने में इक्विटी-हैवी हो गए हैं। वित्त वर्ष 27 में संतुलन बेहद जरूरी है। इक्विटी के साथ-साथ डेट और गोल्ड को भी पोर्टफोलियो में शामिल करें। जहां इक्विटी ग्रोथ देती है, वहीं डेट स्थिरता प्रदान करता है और गोल्ड अनिश्चितता के समय सुरक्षा कवच का काम करता है। साल में कम से कम एक बार पोर्टफोलियो को रीबैलेंस करना जरूरी है।

3. सही मायनों में डाइवर्सिफिकेशन अपनाएं

कई निवेशक मानते हैं कि ज्यादा म्यूचुअल फंड रखना ही डाइवर्सिफिकेशन है, जबकि ऐसा नहीं है। अगर सभी फंड एक ही तरह के सेक्टर या मार्केट कैप में निवेश कर रहे हैं, तो जोखिम बना रहता है। बेहतर होगा कि पोर्टफोलियो में लार्ज कैप, फ्लेक्सी कैप, डेट और गोल्ड का संतुलित मिश्रण हो। इसके अलावा सीमित स्तर पर अंतरराष्ट्रीय निवेश भी जोड़ा जा सकता है, जिससे जोखिम और रिटर्न का संतुलन बेहतर होता है।

4. वोलाटिलिटी को अवसर के रूप में देखें

वित्त वर्ष 27 में बाजार में उतार-चढ़ाव बना रह सकता है। ऐसे में घबराने की बजाय इसे अवसर के रूप में देखना चाहिए। एसआईपी इस तरह के माहौल में बेहद प्रभावी साबित होती है, क्योंकि यह लागत को औसत करती है। इसके साथ ही, बाजार में गिरावट आने पर अतिरिक्त निवेश (स्टैगर्ड तरीके से) करना लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न दे सकता है। सबसे जरूरी है कि भावनाओं के बजाय अनुशासन के साथ निवेश जारी रखा जाए।

5. लिक्विडिटी को नजरअंदाज न करें

कई निवेशक अपनी अधिकांश राशि बाजार से जुड़े साधनों में लगा देते हैं और जरूरत पड़ने पर नुकसान में निवेश तोड़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इससे बचने के लिए कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड जरूर रखें। यह फंड न केवल आपको संकट में सुरक्षा देगा, बल्कि बाजार में अवसर आने पर अतिरिक्त निवेश की सुविधा भी देगा।

6. डेट निवेश की अहमियत समझें

तेजी के दौर में डेट निवेश को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है, लेकिन अस्थिर बाजार में इसकी भूमिका बढ़ जाती है। डेट इंस्ट्रूमेंट्स स्थिर और अनुमानित रिटर्न देते हैं, साथ ही पोर्टफोलियो के कुल जोखिम को कम करते हैं। खासकर शॉर्ट-टू-मिड टर्म लक्ष्यों के लिए डेट एक मजबूत विकल्प है। यह पोर्टफोलियो को संतुलन और स्थिरता प्रदान करता है।

7. फंड चयन से ज्यादा जरूरी है अनुशासन

निवेशक अक्सर "सबसे अच्छा फंड" ढूंढने में समय लगाते हैं, लेकिन असल में लंबे समय में सफलता अनुशासन और निरंतरता से मिलती है। बार-बार फंड बदलना नुकसानदायक हो सकता है, क्योंकि इससे अक्सर निवेशक ऊंचे दाम पर खरीदते और गिरावट में बेचते हैं। बेहतर है कि कुछ अच्छे फंड चुनकर लंबे समय तक निवेशित रहें और समय-समय पर समीक्षा करते रहें।

अनुशासन ही सफलता की कुंजी

वित्त वर्ष 27 ऐसा वर्ष हो सकता है जहां बाजार निवेशकों की समझ और धैर्य की परीक्षा लेगा। यह समय आक्रामक या बिना योजना वाले निवेश का नहीं है। जो निवेशक संतुलन, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन पर ध्यान देंगे, वही लंबी अवधि में सफल होंगे। बाजार को समय करने की कोशिश करने के बजाय ऐसा पोर्टफोलियो बनाना ज्यादा समझदारी है, जो हर परिस्थिति में टिक सके। अंततः, निवेश में सफलता किसी एक बड़े फैसले से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे सही निर्णयों को लगातार लागू करने से मिलती है। समझदारी से निवेश करें और अपने वित्तीय भविष्य को मजबूत बनाएं।

दुनिया में बाजार कभी सीधी रेखा में नहीं चलता, उतार-चढ़ाव, गिरावट, रिकवरी और अनिश्चितता हमेशा बनी रहती है

10,000 की एसआईपी या 10 लाख का लंपसम कौन देगा बड़ा रिटर्न

जानकारी | बिजनेस डेस्क

> *आज के समय में, जब वैश्विक और घरेलू कारकों के कारण बाजार में अस्थिरता बढ़ी हुई है, यह संतुलित रणनीति और भी प्रासंगिक हो जाती है। यह निवेशक को न केवल बेहतर रिटर्न की संभावना देती है, बल्कि मानसिक संतुलन भी बनाए रखने में मदद करती है। निवेश का उद्देश्य केवल अधिकतम रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि ऐसे निर्णय लेना भी है, जिन्हें लंबे समय तक सहजता से निभाया जा सके।*

आज के अस्थिर और उतार-चढ़ाव भरे बाजार में म्यूचुअल फंड निवेशकों के सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर एसआईपी बेहतर है या लंपसम निवेश। खासकर तब, जब अचानक आपके हाथ में 10 लाख रुपये की बड़ी राशि आ जाए चाहे वह बोनस हो, बचत हो या किसी निवेश का रिटर्न। एक तरफ एसआईपी का अनुशासित और अपेक्षाकृत सुरक्षित तरीका है, जिसमें बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम होता है, वहीं दूसरी ओर लंपसम निवेश है, जो सही समय पर किया जाए तो तेज कंपाउंडिंग के जरिए बड़ा रिटर्न दे सकता है। लेकिन जब बाजार गिरता है, पोर्टफोलियो लाल दिखता है और निवेशक घबराने लगते हैं, तब यह दुविधा और भी गहरी हो जाती है कि निवेश जारी रखें या रणनीति बदलें। ऐसे में 10 साल की अवधि में कौन-सा तरीका ज्यादा संपत्ति बनाता है। यही सवाल हर निवेशक के मन में उठता है।

पहली नजर में लंपसम निवेश ज्यादा आकर्षक लगता है। इसका कारण है कंपाउंडिंग की ताकत। जब पूरी राशि एक ही बार में निवेश हो जाती है, तो वह पहले दिन से ही बाजार में काम करना शुरू कर देती है। यदि हम 10 साल की अवधि और औसतन 12% सालाना रिटर्न मानें, तो 10 लाख का लंपसम निवेश लगभग 31 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। इसके मुकाबले 10,000 की मासिक एसआईपी, जिसमें कुल निवेश 12 लाख रुपये होता है, लगभग 22.5 लाख रुपये का फंड तैयार करती है। इस सीधी तुलना में लंपसम स्पष्ट रूप से आगे दिखाई देता है।

निवेश केवल आंकड़ों का खेल नहीं

निवेश केवल आंकड़ों का खेल नहीं है। असल दुनिया में बाजार कभी सीधी रेखा में नहीं चलता। इसमें उतार-चढ़ाव, गिरावट, रिकवरी और अनिश्चितता हमेशा बनी रहती है। यही वह जगह है, जहां एसआईपी की अहमियत समझ में आती है। एसआईपी निवेशक को बाजार की टाइमिंग की चिंता से मुक्त करती है। वह हर महीने एक तय राशि निवेश करता है। चाहे बाजार ऊपर हो या नीचे। इसका सबसे बड़ा फायदा "रुपी कॉस्ट एवरेजिंग" के रूप में मिलता है, जहां निवेशक महंगे और सस्ते दोनों दामों पर यूनिट खरीदता है, जिससे उसकी औसत लागत संतुलित रहती है।

एसआईपी की ताकत और स्पष्ट

जब बाजार गिरता है, तब एसआईपी की ताकत और स्पष्ट हो जाती है। उस समय अधिकांश निवेशक घबराकर निवेश रोक देते हैं, लेकिन जो निवेशक एसआईपी जारी रखते हैं, वे कम कीमत पर ज्यादा यूनिट खरीदते हैं। यही यूनिट्स बाजार के संभलने पर बेहतर रिटर्न देती हैं। इसके विपरीत, लंपसम निवेश में यदि निवेश गलत समय पर यानी बाजार के उच्च स्तर पर किया गया हो, तो शुरुआती गिरावट निवेशक को मानसिक दबाव में ला सकती है। कई बार निवेशक घबराकर नुकसान में ही पैसा निकाल लेते हैं, जिससे दीर्घकालिक लाभ का अवसर खत्म हो जाता है।

सही उत्पाद चुनना जरूरी

यहां एक महत्वपूर्ण पहलू 'निवेशक का व्यवहार' है। निवेश में सफलता सही उत्पाद चुनने से नहीं, बल्कि सही व्यवहार बनाए रखने से मिलती है। बाजार की गिरावट, नकारात्मक खबरें और लाल होते पोर्टफोलियो निवेशकों के धैर्य की परीक्षा लेते हैं। एसआईपी एक अनुशासित ढांचा प्रदान करती है, जो निवेशक को नियमित बने रहने में मदद करता है। वहीं लंपसम निवेश में निर्णय का पूरा भार एक ही समय पर होता है, जो मानसिक रूप से अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि लंपसम निवेश गलत है। यदि बाजार का मूल्यांकन आकर्षक हो, निवेशक के पास लंबी अवधि का नजरिया हो और वह उतार-चढ़ाव सहने की क्षमता रखता हो, तो लंपसम रणनीति अत्यंत प्रभावी हो सकती है। जब बाजार लगातार ऊपर बढ़ रहा हो, लंपसम निवेश अधिक लाभ देता है क्योंकि पूरा पैसा शुरू से ही कंपाउंडिंग का लाभ उठा रहा होता है।

कोई एक सार्वभौमिक उत्तर नहीं

अंततः, एसआईपी और लंपसम में से कौन बेहतर है, इसका कोई एक सार्वभौमिक उत्तर नहीं है। यह पूरी तरह निवेशक की जोखिम लेने की क्षमता, निवेश अवधि और व्यक्तिगत सुविधा पर निर्भर करता है। महत्वपूर्ण यह है कि निवेशक अपनी रणनीति को समझे, बाजार की अस्थिरता से विचलित न हो और अनुशासन बनाए रखे।

---

15 लाख से ज्यादा सैलरी पर भी जीरो टैक्स का मौका

बिजनेस डेस्क

मिडिल क्लास के लिए टैक्स बचाना हमेशा से एक बड़ी चुनौती रहा है। हर साल बढ़ती सैलरी के साथ टैक्स का बोझ भी बढ़ता जाता है, जिससे हाथ में आने वाली आय सीमित रह जाती है। लेकिन वित्त वर्ष 2026-27 के नए टैक्स नियमों ने इस धारणा को बदलने का मौका दिया है। अब सही प्लानिंग और कुछ स्मार्ट विकल्पों के जरिए 15 लाख रुपये से अधिक सैलरी वाले लोग भी अपना टैक्स पूरी तरह शून्य कर सकते हैं। सरकार द्वारा लागू किए गए नए टैक्स रिजीम ने कई ऐसे प्रावधान दिए हैं, जो पहली नजर में छोटे लगते हैं, लेकिन मिलकर बड़ा फायदा देते हैं। खासतौर पर मील वाउचर्स, स्टैंडर्ड डिडक्शन और एम्प्लॉयर के जरिए किए गए निवेश इस गणित को पूरी तरह बदल देते हैं।

मील वाउचर्स बने गेम चेंजर

नए टैक्स नियमों में मील वाउचर्स को एक बड़ा फायदा माना जा रहा है। सेक्शन 115बीएसी के तहत प्रति भोजन 200 रुपये तक के वाउचर्स को टैक्स फ्री कर दिया है। अगर आपकी कंपनी आपको रोजाना लंच और डिनर के लिए 400 के वाउचर देती है, तो महीने के लगभग 22 कार्य दिवसों में यह राशि 8,800 हो जाती है। सालभर में यही रकम 1,05,600 रुपये तक पहुंच जाती है। यह राशि सीधे आपकी ग्रॉस सैलरी से घट जाती है, जिससे आपकी टैक्सेबल इनकम कम हो जाती है। यानी छोटे-छोटे खर्चों को स्मार्ट तरीके से बड़ा टैक्स बचा सकते हैं।

3.86 लाख की कुल छूट कैसे बनती है

- आपकी कुल सीटीसी 15.85 लाख रुपये है, तो आप चार प्रमुख तरीकों से अपनी टैक्सेबल इनकम को काफी हद तक घटा सकते हैं। पहले आता है स्टैंडर्ड डिडक्शन, जो नए टैक्स रिजीम में 75,000 तक दिया जा रहा है। यह फ्लैट छूट है, जिसे हर सैलरीड क्लेम कर सकता है।
- दूसरा बड़ा घटक है एम्प्लॉयर का पीएफ योगदान। आपकी बेसिक सैलरी का लगभग 12% हिस्सा कंपनी आपके प्रोविडेंट फंड में जमा करती है, जो टैक्स फ्री होता है। उदाहरण के तौर पर यह राशि करीब 95,100 रुपये तक हो सकती है।
- तीसरा और बेहद अहम हिस्सा है एनपीएस (नेशनल पेंशन सिस्टम)। सेक्शन 80सीसीडी(2) के तहत कंपनी द्वारा बेसिक सैलरी का 14% तक का योगदान टैक्स से मुक्त होता है। यह लगभग 1,10,950 रुपये तक की छूट दे सकता है।
- चौथा घटक है मील वाउचर्स, जिससे सालाना 1,05,600 रुपये की सीधी कटौती मिलती है। इन सभी को जोड़ने पर कुल टैक्स छूट 3,86,650 रुपये तक पहुंच जाती है। यही वह "स्मार्ट गणित" है, जो आपकी टैक्सेबल इनकम को काफी नीचे ले आता है।

12 लाख की सीमा और जीरो टैक्स का फायदा

नए टैक्स सिस्टम में एक महत्वपूर्ण सीमा 12 लाख रुपये की है। यदि आपकी टैक्सेबल इनकम 12 लाख रुपये या उससे कम रहती है, तो आपको रिबेट का फायदा मिलता है और आपका प्रभावी टैक्स शून्य हो जाता है। जब 15.85 लाख रुपये की सैलरी में से 3.86 लाख रुपये की छूट घटाई जाती है, तो आपकी नेट टैक्सेबल इनकम लगभग 11.98 लाख रुपये रह जाती है। यह 12 लाख रुपये की सीमा से नीचे है, इसलिए आपको कोई टैक्स नहीं देना पड़ता। यानी सही स्ट्रक्चरिंग और प्लानिंग के जरिए आप कानूनी रूप से अपनी टैक्स देनदारी को पूरी तरह खत्म कर सकते हैं।

वसीयत, नॉमिनेशन और इंश्योरेंस हैं, परिवार के भविष्य की मजबूत दीवारें

योजना | बिजनेस डेस्क

अक्सर जब लोग एस्टेट प्लानिंग शब्द सुनते हैं, तो उनके मन में यह धारणा बन जाती है कि यह केवल अमीर लोगों या रिटायरमेंट के करीब पहुंच चुके लोगों के लिए होती है। लेकिन हकीकत इससे बिल्कुल अलग है। एस्टेट प्लानिंग का मतलब है अपने वित्तीय संसाधनों और संपत्तियों को इस तरह व्यवस्थित करना कि किसी भी अनहोनी की स्थिति में आपके परिवार को आर्थिक और कानूनी परेशानियों का सामना न करना पड़े। खासकर 30 की उम्र वह पड़ाव होती है, जब जिम्मेदारियां तेजी से बढ़ती हैं और ऐसे में सही समय पर की गई प्लानिंग बेहद अहम हो जाती है।

30 की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते व्यक्ति का जीवन कई बदलावों से गुजरता है। करियर स्थिर होने लगता है, शादी हो जाती है, बच्चों की जिम्मेदारी जुड़ जाती है और कई बार घर या वाहन के लिए लोन भी लिया जाता है। ऐसे में आपकी फाइनेंशियल जिम्मेदारियां सिर्फ आपके तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि पूरे परिवार पर निर्भर हो जाती हैं। यदि किसी कारणवश आपके साथ कुछ अनहोनी हो जाए, तो परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो सकता है। एस्टेट प्लानिंग इस जोखिम को कम करती है और आपके परिवार को सुरक्षित भविष्य देने में मदद करती है।

30 की उम्र में एस्टेट प्लानिंग, आज की तैयारी, कल की सुरक्षा

वसीयत : स्पष्टता-सुरक्षा का आधार

एस्टेट प्लानिंग का सबसे महत्वपूर्ण और पहला कदम है वसीयत बनाना। वसीयत एक कानूनी दस्तावेज होता है, जिसमें यह स्पष्ट रूप से लिखा होता है कि आपकी संपत्ति, निवेश और अन्य एसेट्स किसे और कैसे मिलेंगे। अगर वसीयत नहीं बनाई गई है, तो आपकी संपत्ति का बंटवारा कानून के अनुसार होगा, जिसमें समय भी ज्यादा लग सकता है और परिवार को अनावश्यक कानूनी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ सकता है। इससे विवाद की स्थिति भी पैदा हो सकती है। इसलिए जरूरी है कि आप समय रहते वसीयत बनाएं और जीवन में बदलाव (जैसे शादी, बच्चे, नई संपत्ति) आने पर उसे अपडेट भी करते रहें।

नॉमिनेशन : आसान एक्सेस की कुंजी

कई लोग बैंक अकाउंट, म्यूचुअल फंड, पीएफ, इंश्योरेंस पॉलिसी और अन्य निवेशों में नॉमिनेशन करना या अपडेट करना भूल जाते हैं। यह एक छोटी लेकिन बेहद महत्वपूर्ण चूक हो सकती है। सही नॉमिनेशन होने से जरूरत के समय आपके परिवार के सदस्य आसानी से पैसे तक पहुंच सकते हैं। इसके विपरीत, यदि नॉमिनेशन नहीं है या गलत है, तो क्लेम प्रक्रिया लंबी और जटिल हो सकती है। इसलिए यह जरूरी है कि आप समय-समय पर अपने सभी वित्तीय खातों और निवेशों में नॉमिनी की जानकारी अपडेट रखें। इससे परिवार को संकट के समय मानसिक और आर्थिक दोनों तरह की राहत मिलती है।

जीवन बीमा: आर्थिक सुरक्षा की ढाल

एस्टेट प्लानिंग का एक अहम हिस्सा है जीवन बीमा। यह सिर्फ टैक्स बचाने का जरिया नहीं, बल्कि आपके परिवार के लिए आर्थिक सुरक्षा कवच है। यदि परिवार की आय का मुख्य स्रोत आप हैं, तो आपके न रहने की स्थिति में लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी आपके परिवार को आर्थिक रूप से संभाल सकती है। इससे घर का खर्च, बच्चों की पढ़ाई, लोन की ईएमआई जैसी जिम्मेदारियां पूरी की जा सकती हैं। 30 की उम्र में बीमा लेने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि उस समय प्रीमियम कम होता है और आपको बेहतर कवर मिल सकता है। साथ ही, आप अपनी जरूरत और लक्ष्यों के अनुसार सही पॉलिसी चुन सकते हैं।

दस्तावेजों का सही प्रबंधन भी जरूरी

एस्टेट प्लानिंग केवल वसीयत और बीमा तक सीमित नहीं है। इसमें आपके सभी जरूरी दस्तावेजों का सही तरीके से रखरखाव भी शामिल है। जैसे बैंक डिटेल्स, इंश्योरेंस पॉलिसी, प्रॉपर्टी पेपर्स, लोन दस्तावेज, निवेश संबंधी जानकारी आदि। इन सभी को एक जगह व्यवस्थित रखना और परिवार के किसी विश्वसनीय सदस्य को इसकी जानकारी देना बहुत जरूरी है। इससे जरूरत के समय भागदौड़ और भ्रम की स्थिति नहीं बनती।

बढ़ती जिम्मेदारियों के बीच वित्तीय सुरक्षा का मजबूत आधार

समय पर लिए गए फैसले परिवार को कानूनी और आर्थिक तनाव से बचाते हैं

जल्दी प्लानिंग के फायदे

कई लोग एस्टेट प्लानिंग को टालते रहते हैं, यह सोचकर कि अभी उम्र कम है या अभी इसकी जरूरत नहीं है। लेकिन यही सबसे बड़ी गलती होती है। जल्दी शुरुआत करने से आप बेहतर और सोच-समझकर फैसले ले सकते हैं। साथ ही, समय के साथ अपनी प्लानिंग को अपडेट और बेहतर भी कर सकते हैं। यह एक बार का काम नहीं, बल्कि एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो आपके जीवन के हर बदलाव के साथ विकसित होती रहती है।

उठाने का सबसे सही समय

एस्टेट प्लानिंग केवल संपत्ति के बंटवारे का माध्यम नहीं है, बल्कि यह आपकी जिम्मेदारी और दूरदर्शिता का प्रतीक है। वसीयत, सही नॉमिनेशन और लाइफ इंश्योरेंस के जरिए आप अपने परिवार को भविष्य की अनिश्चितताओं से सुरक्षित कर सकते हैं। 30 की उम्र इस दिशा में पहला मजबूत कदम उठाने का सबसे सही समय है। आज की गई सही प्लानिंग आपके परिवार को कल के संकट से बचा सकती है और उन्हें एक सुरक्षित व स्थिर जीवन दे सकती है।

खबर संक्षेप

जानलेवा हमला व पिस्तौल छीनने का आरोपी काबू

फतेहाबाद। खारा खेड़ी गांव में हुई मारपीट, फायरिंग के प्रयास और लाइसेंसी पिस्तौल छीनने के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना सदर फतेहाबाद पुलिस ने एक मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। थाना प्रभारी निरीक्षक प्रहलाद के अनुसार, गांव खारा खेड़ी निवासी विनोद कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 16 अप्रैल की रात वह अपने कार्यालय में मौजूद थे। इसी दौरान आरोपी विनोद गोदारा निवासी खारा खेड़ी अपने एक अन्य साथी के साथ ट्रैक्टर पर सवार होकर वहां पहुँचा और गाली-गलौज शुरू कर दी। शिकायतकर्ता ने जब इसका विरोध किया, तो आरोपी ने उन पर देसी कट्टा तान दिया।

केशव गोवर्धन गोशाला रतिया में हवन संपन्न

रतिया। लाली रोड पर स्थित केशव गोवर्धन गोशाला की नवग्रह वाटिका में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य यजमान के रूप में राजपाल ग्रोवर, अध्यक्ष अरोड़वंश महासभा तथा सतीश हांडा अध्यक्ष पंजाबी सभा ने पूजन कराया। यज्ञ कराने पर मुख्य आचार्य अवधेश शास्त्री ने कहा कि देशी गोवंश और नवग्रह वाटिका के मध्य में हवन करने से सभी ग्रह और पितर शांत होते हैं तथा जीवन में सकारात्मक शक्तियों का आगमन होता है। हर किसी को यहाँ हवन यज्ञ और गोपूजन करना चाहिए। गोशाला के अध्यक्ष विद्यासागर बाघला ने बताया आज से सभी के लिए कि गोशाला में ये व्यवस्था कर दी गई है।

भगवान परशुराम जयंती पर हवन-यज्ञ आज

फतेहाबाद। भगवान श्री परशुराम जन्मोत्सव एवं अक्षय तृतीया के अवसर पर श्री ब्राह्मण सभा, फतेहाबाद द्वारा 19 अप्रैल रविवार को बीघड़ रोड स्थित भगवान श्री परशुराम मंदिर में हवन-यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। इस धार्मिक आयोजन को लेकर तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। कार्यक्रम के अनुसार प्रातः 8 बजे ध्वजारोहण किया जाएगा, जो पंडित चरणजीत शर्मा, भंडारे वाले बाबा के कर-कमलों द्वारा संपन्न होगा। इसके पश्चात प्रातः सवा 8 बजे हवन-यज्ञ शुरू होगा, जिसमें मुख्य यजमान के रूप में देवेंद्र शर्मा, कुम्हारिया वाले एवं उनका परिवार शामिल रहेगा। हवन-यज्ञ के उपरांत श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया जाएगा।

कन्हड़ी में पोषण सप्ताह पर कार्यक्रम आयोजित

टोहाना। बच्चों के पोषण और उनके सर्वांगीण विकास में माताओं के साथ-साथ पुरुषों की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा चलाए जा रहे पोषण पखवाड़ा के अंतर्गत गांव कन्हड़ी में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सुपरवाइजर करमजीत कौर की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में अनेक गतिविधियां आयोजित हुई। कार्यक्रम के दौरान सुपरवाइजर करमजीत कौर ने उपस्थितजनों को जागरूक करते हुए बच्चे के विकास में पुरुष देखभाल कर्ताओं के महत्व पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

ठगी करने वाला आरोपी पुलिस रिमांड पर

हांसी। शहर थाना पुलिस ने नौकरी दिलवाने के नाम पर ठगी करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सिसाय बोलान निवासी खेमचंद उर्फ दीपक के रूप में हुई है। जांच अधिकारी एसआई जोगिंद्र कुमार ने बताया कि आरोपी खेमचंद उर्फ दीपक द्वारा आम लोगों को हरियाणा कौशल रोजगार निगम के तहत नौकरी लगवाने का झांसा देकर रुपए ऐंठे जा रहे थे। इसके अलावा आरोपी द्वारा वाहनों की वैधता बढ़वाने एवं उनकी पासिंग करवाने के कार्यों के नाम पर भी लोगों से धनराशि ली जाती थी। शिकायत प्राप्त होने पर थाना शहर हांसी में आरोपी के खिलाफ संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया। पुलिस कार्रवाई करते हुए पुलिस ने आरोपी को काबू कर अदालत में पेश कर उसे दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

साइक्लोथॉन रैली के माध्यम से युवाओं को दिया नशे दूर रहने का संदेश

नशा व्यक्ति ही नहीं बल्कि पूरे परिवार व समाज को कर देता है खोखला : एसपी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

सिरसा। साइक्लोथॉन रैली में भाग लेते एसपी व अन्य। फोटो : हरिभूमि

पुलिस अधीक्षक दीपक सहारण ने कहा कि नशा केवल एक व्यक्ति को ही नहीं बल्कि उसके पूरे परिवार और समाज को खोखला कर देता है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाएं और खेल व शिक्षा के क्षेत्र में अपनी रुचि के अनुसार आगे बढ़ें। नशा मुक्त समाज का सपना तभी साकार हो सकता है जब इसमें जनभागीदारी सुनिश्चित हो। एसपी दीपक सहारण शनिवार को सिरसा जिले के रानियां में साइक्लोथॉन रैली को हरी झंडी दिखाने के बाद उपस्थित युवाओं को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि यदि किसी के आसपास कोई व्यक्ति नशे की गिरफ्त में है तो उसे छोडऩे के लिए प्रेरित करना समाज के हर व्यक्ति का दायित्व है। सिरसा पुलिस प्रशासन नशे के आदी युवाओं को मुख्यधारा में वापस लाने के लिए निरंतर प्रयासरत है और इसके लिए हर संभव सहायता प्रदान की जा रही है। एसपी ने साइक्लोथॉन में भाग लेने वाले युवाओं को बब्बर शेर की संज्ञा देते हुए कहा कि नशा मुक्त समाज के निर्माण में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यदि युवा शक्ति जागरूक हो जाए तो वह दिन दूर नहीं जब समाज पूर्ण रूप से नशा मुक्त होगा।

उन्होंने जानकारी दी कि सिरसा पुलिस द्वारा अब तक 172 गांवों तथा ऐलनाबाद, सिरसा और रानियां के 12 वार्डों को नशा मुक्ति का संदेश दे चुकी है। उन्होंने अन्य गांवों के सरपंचों और ग्रामीणों से भी अपील की कि वे इन गांवों को रोल मॉडल मानते हुए अपने क्षेत्रों को नशा मुक्त बनाने में पुलिस प्रशासन का सहयोग करें।

इस अवसर पर युवाओं ने नशे के खिलाफ जागरूकता फैलाने का संकल्प लिया और नशा मुक्त सिरसा के समर्थन में जोरदार नारे लगाए। इस साइक्लोथॉन रैली में भी डीएसपी सिद्धार्थ बिश्नोई, ऐलनाबाद थाना प्रभारी प्रगट सिंह, रानियां थाना प्रभारी मनिंदर सिंह सहित पुलिस प्रशासन के अधिकारी एवं बड़ी संख्या में युवा शामिल रहे।

यहां से गुजरी रैली

यह साइक्लोथॉन रैली रानियां थाना क्षेत्र के अंतर्गत जीवन नगर स्थित सतगुरु प्रताप सिंह स्टेडियम से शुरू होकर संत नगर, जगजीत नगर दमदमा, धर्मपुर, संतोखपुरा, हार्निया, हर्निया खुर्द तथा अमृतसर खुह जैसे कुल 9 गांवों से गुजरते हुए लगभग 20 किलोमीटर का सफर तय कर गुरुदेव इंडोर स्टेडियम संत नगर में संपन्न हुई।

डीएवी पुलिस स्कूल में महात्मा हंसराज जयंती पर बहुआयामी चरित्र निर्माण कार्यक्रम में लिया भाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

डीएवी पुलिस स्कूल, फतेहाबाद में महान शिक्षाविद् एवं युगप्रवर्तक महात्मा हंसराज जी की जयंती के अवसर पर कक्षा 8 के विद्यार्थियों के लिए बहुआयामी चरित्र निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के समग्र विकास के साथ-साथ उनमें नैतिक मूल्यों, आत्म-जागरूकता एवं जिम्मेदारी की भावना का विकास करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण एवं शांति पाठ के साथ हुआ, जिससे वातावरण सकारात्मक एवं आध्यात्मिक बन गया। इसके पश्चात विद्यार्थियों को महात्मा हंसराज के जीवन, उनके आदर्शों एवं शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न ज्ञानवर्धक एवं सहभागितापूर्ण सत्र आयोजित किए गए।

विभिन्न सत्र संपन्न

आत्म-जागरूकता सत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वयं की पहचान, अपनी क्षमताओं एवं कमजोरियों को समझने तथा आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया। नैतिक मूल्यों पर आधारित सत्र में ईमानदारी, अनुशासन, सम्मान, परिश्रम एवं सहयोग जैसे जीवन मूल्यों का महत्व समझाया गया। वैदिक मूल्यों के साथ संगीत एवं पेपर आर्ट गतिविधि सत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों ने पेपर क्राफ्ट गतिविधियों के माध्यम से संस्कार, सहभागिता एवं सहयोग जैसे मूल्यों को सीखा। मूल्यांकन जागरूकता सत्र में विद्यार्थियों को परीक्षा मूल्यांकन प्रक्रिया, अंक वितरण एवं उत्तर लेखन की प्रभावी विधियों के बारे में जानकारी दी गई, जिससे वे अपने शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बना सकें। प्रधानाचार्या ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उन्हें महात्मा हंसराज जी के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया।

रिटायर्ड कर्मचारी 21 अप्रैल को डीसी कार्यालय पर करेंगे विशाल रोष प्रदर्शन

फतेहाबाद। बैठक में भाग लेते रिटायर्ड कर्मचारी संघ के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

- रिटायर्ड कर्मचारी संघ ब्लॉक फतेहाबाद की बैठक प्रधान मा. रामदास की अध्यक्षता में संपन्न

रिटायर्ड कर्मचारी संघ ब्लॉक फतेहाबाद की बैठक आज ब्लॉक प्रधान मा. रामदास की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक का संचालन ब्लॉक सचिव हरकिशन लाल कम्बोज ने किया। इस अवसर पर राज्य कमेटी से जोगेन्द्र सिंह भ्याना, जिला वित्त सचिव रघुनाथ मेहता और जिला सचिव बेगराज विशेष तौर पर उपस्थित रहे। बैठक के आरंभ में हाल ही में हुए हादसों और दिवंगत साथियों को श्रद्धांजलि दी गई।

बैठक को संबोधित करते हुए मास्टर रामदास और हरकिशन लाल कम्बोज ने कहा कि अखिल भारतीय राज्य सरकारी पेंशनर्स फैडरेशन के आह्वान पर 21 अप्रैल को पूरे देश में रोष प्रदर्शन किया जा रहा है। इसी कड़ी में फतेहाबाद के पेंशनर्स भी अपनी मांगों को लेकर जिला उपायुक्त कार्यालय पर विशाल प्रदर्शन करेंगे और मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपेंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र और राज्य सरकार धीरे-धीरे पेंशनर्स के अधिकारों को समाप्त कर रही है, जिसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

प्रमुख मांगें

संघ ने मांग की है कि 65 वर्ष की आयु में 10 प्रतिशत और 75 वर्ष की आयु में 20 प्रतिशत मूल पेंशन में वृद्धि की जाए। कम्यूट की गई राशि की कटौती 15 वर्ष की बजाय केवल 11 वर्ष तक की जाए। पैनल वाले अस्पतालों में मुफ्त इलाज, 3000 मासिक मेडिकल भत्ता और बिलों के भुगतान की समय सीमा तय हो। पेंशन संबंधित वित्त विधेयक 2025 को तुरंत वापस लिया जाए और 8वें वेतन आयोग का लाभ सभी पेंशनर्स को मिले। अगर सरकार ने आठवें वेतन आयोग में छीने गए लाभ रोके तो रिटायर्ड कर्मचारी संघ सड़कों पर उतरने को मजबूर होंगे।

आज नहीं जागे तो पड़ेगा पछताना, युवा पीढ़ी को नशे से बचाना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी : भवानी सिंह

चाय की चुस्कियों के बीच युवाओं को नशे से दूर रहने का संदेश

- महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट ने जिले को नशा मुक्त बनाने के लिए मिशन मोड पर काम कर रहा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

फतेहाबाद। चाय की चुस्कियों के साथ युवाओं को नशे के खिलाफ जागरूक करते भवानी सिंह।

आज की युवा पीढ़ी को नशे की दलदल से बचाना केवल सरकार या पुलिस का काम नहीं है, बल्कि यह हम सभी की सामूहिक सामाजिक जिम्मेवारी है। नशा एक ऐसी दीमक है जो हमारे समाज की नींव को खोखला कर रही है। यदि हम आज सचेत नहीं हुए और अपनी आने वाली नस्लों को इस बुराई से नहीं बचाया, तो भविष्य में हमारे पास पछताने के अलावा कुछ नहीं बचेगा। यह बात महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक भवानी सिंह ने आज शहर में युवाओं को संबोधित करते हुए कहे। नशा मुक्ति के लिए जिले भर में अलख जगा रहे भवानी सिंह आज एक अलग अंदाज में नजर आए। उन्होंने जीटी रोड स्थित दिल्ली वाला अस्पताल के बाहर 'मोदी टी स्टाल' पर युवाओं के बीच बैठकर चाय की चुस्कियां लेते हुए उनसे दिल की बात की और नशे के खिलाफ इस जंग में साथ आने का आह्वान किया। यहां एकत्रित युवाओं के साथ चाय पीते हुए उन्होंने बड़े ही सरल अंदाज में नशे के दुष्प्रभावों को समझाया।

भवानी सिंह ने कहा कि नशा न केवल स्वास्थ्य को नष्ट करता है, बल्कि व्यक्ति के आत्मसम्मान और परिवार की खुशियों को भी निगल जाता है। युवाओं ने भवानी सिंह की इस पहल की सराहना की और विश्वास दिलाया कि वे न केवल खुद नशे से दूर रहेंगे, बल्कि समाज में अन्य लोगों को भी इसके प्रति जागरूक करेंगे। गौरतलब है कि महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट फतेहाबाद जिले को नशा मुक्त बनाने के लिए मिशन मोड पर काम कर रहा है। भवानी सिंह के नेतृत्व में ट्रस्ट द्वारा जिले भर के गांवों और शहरों में लगातार खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं, ताकि युवाओं की ऊर्जा को खेलों के माध्यम से सकारात्मक दिशा दी जा सके। ट्रस्ट का मानना है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है और खेल नशे का सबसे बड़ा दुश्मन है। इस अवसर पर वजीर सिंह, रूपन महतानी, पवन गुज्जर, ललित कुमार, राजू गुज्जर, हरमीत सिंह, अशोक रत्ताटिब्बा, अंकुश, विवेक शर्मा, महेन्द्र मास्टर, कृष्ण पारचा, नीलू ठाकुर, रितिक ठाकुर सहित अनेक युवा मौजूद रहे।

एसएस जैन सभा श्याम नगर में श्रद्धापूर्वक मनाई अक्षय तृतीया, अनुपम मुनि महाराज ने बताया पर्व का महत्व

फतेहाबाद। भारतीय संस्कृति एवं धर्मों में अत्यंत महत्वपूर्ण और शुभ माने जाने वाले अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर श्याम नगर स्थित एसएस जैन सभा में धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अनुपम मुनि जी महाराज के पावन सान्निध्य में आयोजित इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया और गन्ने के रस से पारणा कर पुण्य लाभ अर्जित किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए अनुपम मुनि जी महाराज ने अक्षय तृतीया के महत्व एवं इससे जुड़ी पावन कथाओं का सुंदर वर्णन किया। उन्होंने बताया कि जैन धर्म में इस दिन का विशेष महत्व है, क्योंकि यही वह पावन दिवस है जब प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जी ने एक वर्ष की कठिन तपस्या के पश्चात श्रियांस कुमार के द्वारा गन्ने के रस से पारणा किया था। मुनि श्री ने कहा कि यह केवल एक साधारण पारणा नहीं था, बल्कि यह त्याग, तप और संयम की एक महान परंपरा का आरंभ था। इसी घटना की स्मृति में आज भी लाखों श्रद्धालु व्रत, तप और आराधना करते हैं। उन्होंने बताया कि हिन्दू धर्म में भी अक्षय तृतीया का अत्यंत व्यापक महत्व है। इसी शुभ दिन भगवान परशुराम जी का अवतरण हुआ था। ऐसी मान्यता भी है कि भगवान गणेश जी ने महान ग्रंथ महाभारत के लेखन का कार्य भी इसी शुभ मुहूर्त में प्रारंभ किया था। इसके अतिरिक्त प्राचीन ब्राह्मण कथाएं भी इस दिन से जुड़ी हुई हैं, जो दान, धर्म और पुण्य के विशेष महत्व को दर्शाती हैं।

विपक्ष के षड्यंत्र ने महिला सम्मान पर किया आघात : खिचड़

फतेहाबाद। संसद में नारी शक्ति वंदन अधिनियम पर हुई हालिया मतदान प्रक्रिया में बिल के पास न हो पाने को लेकर जिला परिषद की चेयरपर्सन एडवोकेट सुमन खिचड़ ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि यह विधेयक महिलाओं को राजनीतिक रूप से मजबूत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक पहल था, जिसका उद्देश्य लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में 33 प्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित करना था। सुमन खिचड़ ने कहा कि कांग्रेस, टीएमसी, डीएमके और सपा जैसे विपक्षी दलों ने एकजुट होकर इस बिल का विरोध किया, जिससे यह पारित नहीं हो सका। उन्होंने इसे सुनियोजित राजनीति बताते हुए कहा कि विपक्ष महिलाओं के सशक्तिकरण की बात तो करता है, लेकिन जब ठोस कदम उठाने का समय आता है तो पीछे हट जाता है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने हमेशा महिला आरक्षण जैसे अहम मुद्दों को केवल चुनावी वादों तक सीमित रखा है और जमीनी स्तर पर कभी गंभीर प्रयास नहीं किए। उन्होंने कहा कि संसद में इस बिल को आवश्यक दो-तिहाई बहुमत नहीं मिल पाना इस बात का प्रमाण है कि विपक्ष की नीयत महिलाओं को अधिकार देने की नहीं है। इस बिल को रोककर विपक्ष ने देश की आधी आबादी के सपनों को ठेस पहुंचाई है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण से वंचित रखना उनके संवैधानिक अधिकारों की अनदेखी है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि विपक्षी दल महिलाओं को केवल वोट बैंक के रूप में देखते हैं, न कि उन्हें निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनाना चाहते हैं। वंदन अधिनियम केवल एक कानून नहीं, बल्कि महिलाओं को बराबरी का हक देने की दिशा में एक मजबूत कदम था।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियां तेज

फतेहाबाद। हरियाणा योग आयोग एवं आयुष विभाग, फतेहाबाद के तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का शनिवार को समापन हुआ। 16 से 18 अप्रैल तक चले इस प्रशिक्षण शिविर में जिलेभर के योग सहायकों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर योग की बारीकियों को गहराई से सीखा। शिविर का आयोजन डॉ. प्रवीण शर्मा के मार्गदर्शन में किया गया, जबकि योग कोऑर्डिनेटर डॉ. भारती और योग विशेषज्ञ अंबिका पांटा ने प्रशिक्षक की भूमिका निभाई।

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को आयुष मंत्रालय द्वारा निर्धारित 'योग प्रोटोकॉल' के सभी अभ्यासों की विस्तार से जानकारी दी गई। योग विशेषज्ञ अंबिका पांटा ने प्रत्येक योग सहायक से व्यक्तिगत संवाद स्थापित कर उन्हें योग की सूक्ष्म तकनीकों का अभ्यास करवाया। समापन अवसर पर सभी योग सहायक योग प्रोटोकॉल के अभ्यास में पूर्णतः निपुण नजर आए। उन्होंने आत्मविश्वास के साथ आगामी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को सफल बनाने का संकल्प लिया। इस मौके पर डॉ. प्रवीण शर्मा और डॉ. भारती ने कहा कि प्रशिक्षित योग सहायक अब ग्रामीण स्तर पर लोगों को योग के प्रति जागरूक करेंगे और योग को जन-जन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाएंगे।

पूर्व उपमुख्यमंत्री के काफिले को रोकना और हथियार दिखाना ओछी मानसिकता का प्रतीक : जतिन

फतेहाबाद। जननायक जनता पार्टी के युवा जिलाध्यक्ष जतिन खिलेरी ने हिसार में प्रदेश के पूर्व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के काफिले को पुलिस द्वारा जबरन रोकने, हथियार दिखाने और धमकी देने की घटना पर कड़ा रोष प्रकट किया है। जतिन खिलेरी ने इसे प्रदेश के लोकतंत्र के लिए एक 'काला दिन' बताते हुए सरकार और पुलिस प्रशासन की इस कार्रवाई की घोर निंदा की है।

युवा जेजेपी नेता ने कहा कि हिसार में पूर्व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के साथ जो व्यवहार किया गया, वह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। बीजेपी सरकार अब सरेआम गुंडागर्दी पर उतर आई है। जब भी जननायक जनता पार्टी और हमारे नेता दुष्यंत चौटाला व दिग्विजय चौटाला आमजन या प्रदेश के लाखों छात्र-छात्राओं की जायज मांगों को लोकतांत्रिक तरीके से उठाते हैं, तो सरकार पुलिस के दम पर उन्हें दबाने का प्रयास करती है। खिलेरी ने कहा कि एक पूर्व उपमुख्यमंत्री और वाई प्लस श्रेणी की सुरक्षा प्राप्त नेता की गाड़ी को जबरन रोकना और उन पर पिस्टल तानना किसी गहरी साजिश की ओर इशारा करता है। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि पुलिस की मंशा साफ थी, तो दुष्यंत चौटाला द्वारा गाड़ी रोकने के प्रयास पर पुलिसकर्मी वहां से भाग क्यों खड़े हुए, यह स्पष्ट करता है कि दाल में कुछ काला है। युवा जिलाध्यक्ष ने बीजेपी सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि सरकार प्रदेश की जनता को जातियों में बांटकर आपस में लड़ाने का जो काम कर रही है, उसे अब प्रदेश के लोग समझ चुके हैं। अब प्रदेश की जनता इनके किसी झांसे में नहीं आएगी। जतिन खिलेरी ने साफ शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा कि हमारे नेताओं के मान-सम्मान को ठेस पहुंचाना किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने मांग की कि इस घटिया हरकत को अंजाम देने वाले पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ तुरंत सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए।

बेसहारा और मंदबुद्धि बुजुर्गों की जांच कर दी आवश्यक सलाह

सतगुरु अपना घर आश्रम में बुजुर्गों का किया स्वास्थ्य परीक्षण, मेडिकल टीम ने दी सेवाएं

- दवाइयों की जरूरत और उनकी दिनचर्या से जुड़े पहलुओं का भी मूल्यांकन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

फतेहाबाद। मेडिकल कैम्प में मंदबुद्धि लोगों की स्वास्थ्य जांच करते विशेषज्ञ।

बाईपास स्थित सद्गुरू कृपा अपना घर मंगल राधिका सदानंद सेवा धाम में शनिवार को आश्रम में रह रहे मंदबुद्धि और बेसहारा बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान सिविल हॉस्पिटल फतेहाबाद की मेडिकल टीम ने सभी जरूरतमंदों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें आवश्यक परामर्श और उपचार संबंधी जानकारी दी। शिविर का उद्देश्य आश्रम में रह रहे लोगों के स्वास्थ्य की नियमित निगरानी सुनिश्चित करना रहा। मेडिकल टीम में डॉ. सुनीता चावला, नर्सिंग स्टाफ से प्रवीन तथा प्रमोद शामिल रहे। टीम ने बुजुर्गों की सामान्य स्वास्थ्य जांच, दवाइयों की जरूरत और उनकी दिनचर्या से जुड़े पहलुओं का भी मूल्यांकन किया। जरूरत के अनुसार मरीजों को आगे के उपचार के लिए सलाह दी गई। आश्रम प्रबंधन ने मेडिकल टीम के इस सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि ऐसे प्रयासों से बेसहारा और जरूरतमंद बुजुर्गों को समय पर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल पाती हैं। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी इस प्रकार के स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाते रहेंगे, ताकि निवासियों का बेहतर स्वास्थ्य सुनिश्चित किया जा सके। इस अवसर पर आश्रम से जुड़े सदस्यों ने सेवा कार्यों में सहयोग देने वाले सभी लोगों का धन्यवाद किया और इसे सामाजिक जिम्मेदारी की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। आश्रम की ओर से कहा गया कि यह सेवा कार्य स्वामी सदानंद जी महाराज के आशीर्वाद से निरंतर जारी है, जिसके माध्यम से जरूरतमंदों की सेवा और देखभाल की जा रही है।

खबर संक्षेप

घर से आभूषण व अन्य सामान चोरी

ओढां। पुलिस ने गांव ओढ़ां निवासी एक महिला की शिकायत पर अज्ञात लोगों के खिलाफ उसके घर के ताले तोडक़र मोबाइल, आभूषण व एलईडी चोरी करने के आरोप में विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया है। पुलिस को दी शिकायत मेंकमलेश कौर ने बताया कि बीती 11 अप्रैल को वह अपने घर को ताले लगाकर अपने बेटे विक्रम सिंह के साथ हरिद्वार गई थी। 14 अप्रैल की सायं जब वे वापस घर पहुंचे तो देखा कि घर के अंदर कमरों के ताले टूटे हुए थे और सामान बिखरा पड़ा था।

नि:शुल्क करियर काउंसलिंग सेमिनार आज

सिरसा। अखिल भारतीय अरोड़ा एकता परिवार द्वारा 19 अप्रेल को नि:शुल्क कैरियर काउंसलिंग सेमिनार का आयोजन किया जाएगा। परिवार के कार्यकारी प्रधान सतबीर सिंह धमीजा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुभाष मोंगा, महासचिव नरेश बजाज, उपाध्यक्ष हरीश सचदेवा, रोजगार प्रकोष्ठ के प्रधान डीपी मलिक, कैरियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अमित तनेजा, उपाध्यक्ष सुरेश सेठी ने संयुक्त रूप से बताया कि यह सेमिनारप्लेनेट वी इमिग्रेशन कार्यालय में आयोजित किया जाएगा।

पुस्तकों का दान सबसे श्रेष्ठ : प्रो. जगदीश

ओढां। चौधरी देवीलाल इंजीनियरिंग एवं तकनीकी संस्थान को एक अधिकारी ने पुस्तकों का प्रेरणादायी दान संस्थान के पुस्तकालय में देकर शैक्षणिक संसाधनों के विस्तार के लिए पहल की गई है। भारत संचार निगम लिमिटेड में जीटीओ के पद पर कार्यरत संजय नेरानिया ने राजकीय इंजीनियरिंग एवं तकनीकी संस्थान के छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य को घ्यान में रखते हुए इंजीनियरिंग एवं तकनीकी विषयों के साथ-साथ अन्य विविध विषयों से संबंधित महत्वपूर्ण एवं उपयोगी पुस्तकों का दान किया।

इंवर्टर-बैटरी चोरी का आरोपी काबू

सिरसा। पुलिस ने एक मकान से इंवर्टर की बैटरी चोरी करने के आरोपी का काबू किया है। मकान मालिक अजय कुमार ने शिकायत में बताया कि 16 अप्रैल को रात्रि के समय मकान से अज्ञात युवकों ने इनवर्टर की बैटरी चोरी कर फरार हो गए। उन्होंने बताया कि थाना की एक पुलिस टीम ने जांच के दौरान महत्वपूर्ण सुराग जुटाते हुए चोरी की वारदात में संलिप्त आरोपी शंकर उर्फ शेखर पुत्र राजकुमार निवासी कंगनपुर को गिरफ्तार कर चोरीशुदा इंवर्टर की बैटरी बरामद कर ली है।

निर्माणाधीन धर्मशाला से बिजली का सामान चोरी

सिरसा। कालांवाली में बनाई जा रही धर्मशाला से चोर बिजली की तारों सहित कीमती सामान चोरी कर ले गए। प्रधान दर्शन सिंह सहित जगदेव सिंह, राजू छिंदा आदि ने बताया कि सभा द्वारा उक्त रोड पर धर्मशाला का निर्माण करवाया जा रहा है। जोकि निर्माणाधीन है। वहां पर बिजली की तारें, लोहे का सामान सहित अनय कीमती सामान पड़ा था। शनिवार को जब वे वहां पर गए तो धर्मशाला में बने कमरे का ताला टूटा पडा था ओर कमरे में पडा लोहे का कीमती सामान गायब था।

हड़ताल के कारण गेहूं कटाई के बीच बढ़ता जा रहा है आगजनी का खतरा

फायर ब्रिगेड कर्मियों की हड़ताल 11वें दिन जारी, विभिन्न संगठनों का मिला समर्थन

पार्षद प्रतिनिधियों व नपा कर्मचारी संघ के जिला प्रधान ने टीम के साथ दिया समर्थन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

फतेहाबाद। फायर कर्मचारियों के धरने को समर्थन देते पार्षद व अन्य सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि। फोटो : हरिभूमि

फतेहाबाद में अग्निशमन कर्मचारियों की हड़ताल शनिवार को 11वें दिन में प्रवेश कर गई। फतेहाबाद में फायर ब्रिगेड कार्यालय के समक्ष कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर डटे हुए हैं। इस हड़ताल की अध्यक्षता इकाई प्रधान विनोद खिचड़ द्वारा की गई, जबकि मंच का संचालन राज्य सचिव सतबीर सहारण ने किया। हड़ताल के 11वें दिन विभिन्न संगठनों और जन प्रतिनिधियों ने धरना स्थल पर पहुंचकर कर्मचारियों की मांगों का पुरजोर समर्थन किया। समर्थन देने वालों में प्रमुख रूप से पार्षद मोहन लाल नारंग, पार्षद प्रतिनिधि योगी हंसराज, सुखदेव सिंह, निर्मल सिवाच, चंद्रभान, कपिल खत्री, मनोज भयाना और पार्षद प्रतिनिधि राजेंद्र आहूजा शामिल रहे। इसके अलावा नगरपालिका कर्मचारी संघ फतेहाबाद के जिला प्रधान विजय ढाका ने भी अपनी टीम के साथ पहुंचकर कर्मचारियों की आवाज बुलंद की।

सरकार जांबाज कर्मियों पर कर रही कड़ा प्रहार

धरने को संबोधित करते हुए मोहन लाल नारंग ने सरकार की नीतियों पर कड़े प्रहार किए। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार इन जांबाज कर्मचारियों के साथ सरासर अन्याय कर रही है। मात्र 16 हजार रुपये की मामूली तनख्वाह में ये कर्मचारी अपनी जान जोखिम में डालकर दूसरों की रक्षा करते हैं। महंगाई के दौर में इतनी कम सैलरी में परिवार का भरण-पोषण करना असंभव है। फरीदाबाद अग्निकांड में शहीद हुए दो कर्मचारियों के परिवारों को एक करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता और सरकारी नौकरी तुरंत दी जानी चाहिए।

सरकार कर रही बड़ी अनहोनी का इंतजार

हड़ताल का सबसे गंभीर पहलू यह है कि वर्तमान में प्रदेश में गेहूं की कटाई का सीजन चरम पर है। तापमान बढने के कारण खेतों और खलिहानों में आगजनी की घटनाएं आए दिन हो रही हैं। ऐसे संवेदनशील समय में अग्निशमन सेवाओं का ठप होना किसी बड़ी त्रासदी को निमंत्रण देने जैसा है। सतबीर सहारण ने कहा कि सरकार शायद किसी बड़ी अनहोनी का इंतजार कर रही है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने उनकी जायज मांगों को जल्द पूरा नहीं किया, तो यह आंदोलन और भी उग्र रूप धारण करेगा। इस दौरान महेंद्र सिंह, जय सिंह, इन्द्र बुगालिया, पंकज भादू और सुमित कुमार सहित भारी संख्या में अग्निशमन कर्मचारी उपस्थित रहे और सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

प्रदेश में किसी व्यापारी से ज्यादती सहन नहीं: गर्ग

फतेहाबाद। व्यापार मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष बजरंग गर्ग व्यापारी प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

- फतेहाबाद में बाजार वाइज प्रभारी किए नियुक्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

शहर के व्यापारी प्रतिनिधियों की मीटिंग हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष व हरियाणा कान्फैड के पूर्व चेयरमैन बजरंग गर्ग की अध्यक्षता में हुई। बैठक में फतेहाबाद व्यापार मंडल के बाजारों के अलग-अलग प्रभारी बनाने पर विचार किया गया। प्रांतीय अध्यक्ष बजरंग गर्ग ने संबोधित करते हुए कहा कि हरियाणा प्रदेश में व्यापार मंडल की इकाइयों का विस्तार किया जा रहा है। हरियाणा में किसी भी व्यापारी के साथ ज्यादती सहन नहीं करेंगे व होने नहीं देंगे। अगर हरियाणा प्रदेश में किसी भी सरकारी अधिकारी ने निजी स्वार्थ के लिए किसी भी व्यापारी को तंग करने की कोशिश की तो उसे बक्शा नहीं जाएगा। हरियाणा में व्यापार मंडल व्यापारी व उद्योगपतियों की समस्या का समाधान करने के लिए रात-दिन प्रयास कर रहा है। बजरंग गर्ग ने कहा कि सरकार को हरियाणा में व्यापार व उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए ज्यादा से ज्यादा सुविधा देनी चाहिए। बजरंग गर्ग ने फतेहाबाद शहर के अलग-अलग बाजारों के प्रभारी नियुक्त किया। नए प्रभारी को व्यापार मंडल प्रधान बजरंग गर्ग, प्रदेश सचिव विनोद अरोड़ा, प्रदेश संगठन मंत्री सुरेंद्र मित्तल, फतेहाबाद प्रधान अशोक नारंग व प्रदेश सचिव श्याम सुन्दर बंसल ने उनका सम्मान किया।

इन्हें मिली जिम्मेदारी

इस अवसर पर थाना रोड प्रभारी देवेंद्र मोगा, प्रेम मोंगा, यश मेहता, सुभाष, चंदन गोस्वामी, धर्मशाला रोड से सुरेंद्र सोनी, परम अरोड़ा, लवली मेहता व तुलसीदास चौक से संजू गुलाटी, गौरव वर्मा, मनोज, हंस मार्केट से सुरेंद्र मेहता, सुरेश बंसल, सन्नी ग्रोवर, पवन जिंदल, गोल्डी वाट्स व पुरानी सब्जी मंडी से अशोक खट्टर, मोहन अरोड़ा, रमेश मदान को, चार मरला में जितेंद्र सरदाना, अनिल वधवा को, जवाहर चौक से विकास उतरेजा, नीरज भटेजा, महेश बजाज, नीरज चौधरी, गुरदीप बग्गा व शिव चौक से हेमराज बजाज, ललित चौधरी को, जीटी रोड में श्याम सुंदर, शक्ति नारंग, मॉडल टाउन, पपीहा रोड से पंकज कुक्कड़ को प्रभारी बनाया गया व शहर के बाकी अन्य बाजारों में भी जल्द ही नए प्रभारियों की नियुक्ति की जाएगी।

सीएमके कॉलेज में समानता, अधिकार व सहयोग तंत्र विषय पर हुआ जागरूकता सत्र

- शैक्षणिक शिक्षा अधिकारों व कर्तव्यों के लिए आवश्यक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

सिरसा। मुख्य वक्ता को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

सीएमके नेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय में विधिक जागरूकता विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्राचार्या अंशु उप्पल ने कहा कि विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए केवल शैक्षणिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों की जानकारी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें सामाजिक रूप से अधिक सजग बनाते हैं। संयोजिका डॉ. दीपिका शर्मा ने बताया कि विद्यार्थियों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ उनकी समस्याओं के समाधान के लिए उपलब्ध सहायता तंत्रों की जानकारी भी प्रदान की। लाला हंसराज फुटेला कॉलेज ऑफ लॉ की डॉ. ममता ने विद्यार्थियों को भारतीय संविधान में निहित समानता के अधिकार, कानूनी सुरक्षा प्रावधानों, उत्पीडऩ से बचाव के उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

लिवर बीमारियों का बढ़ता खतरा समय रहते जांच जरूरी: डॉ. भरत

- विश्व लिवर दिवस पर लोगों को खान-पान सुधारने की सलाह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

डॉ. भरत।

विश्व लिवर दिवस के अवसर पर हिसार स्थित सुखदा अस्पताल के डीएम गैस्ट्रोलॉजिस्ट डॉ. भरत ने लोगों को लिवर की सेहत के प्रति सजग रहने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में बदलती जीवनशैली, असंतुलित खान-पान और नशे की आदतों के कारण लिवर से जुड़ी बीमारियों के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। खासकर युवाओं में फैटी लिवर और अन्य समस्याएं पहले की तुलना में अधिक सामने आ रही हैं, जो भविष्य में गंभीर रूप ले सकती हैं। विश्व में 19 अप्रैल को लिवर दिवस मनाया जाता है।

डॉ. भरत ने बताया कि लिवर शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो खून को साफ करने, पाचन क्रिया को सुचारू बनाए रखने और शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने का कार्य करता है। यदि लिवर प्रभावित होता है तो इसका असर पूरे शरीर पर पड़ता है और कई जटिल बीमारियां उत्पन्न हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में लोगों की शारीरिक गतिविधियां कम हो गई हैं।

न्यूज डायरी

महिला आरक्षण के नाम पर लोकतंत्र से खिलवाड़ करने की साजिश बेनकाब : सांसद सैलजा

सिरसा। सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि महिलाओं के अधिकारों के नाम पर देश के लोकतंत्र, संविधान और संघीय ढांचे को कमजोर करने की साजिश रची जा रही थी, जिसे एकजुट विपक्ष ने समय रहते विफल कर दिया। सांसद ने शनिवार को जारी प्रेस बयान में कहा कि सरकार महिला आरक्षण के नाम पर परिसीमन का ऐसा जाल बुन रही थी, जिससे राजनीतिक संतुलन बिगाडक़र लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपने पक्ष में मोड़ा जा सके।

सर्व शिक्षा अभियान में विद्यार्थियों को बांटी साइकिलें

सिरसा। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत छठी कक्षा के अनुसूचित जाति के विद्यार्थी जो कि 3 किलोमीटर से अधिक दूरी से आते हैं उन्हें साइकिल वितरित की गई। इस अवसर पर विद्यार्थियों के अभिभावकों को भी बुलाया गया। इस अवसर पर चमन भारतीय शिक्षाविद् ने कहा कि साइकिल मिलने से छठी कक्षा के जो विद्यार्थी 3 किलोमीटर से ज्यादा दूरी से आते हैं, उनको विद्यालय पर समय पर आने में सुविधा होगी और थकान से भी राहत मिलेगी और साथ में समय की भी बचत होगी।

चत्तरगढ़ पट्टी स्कूल में विद्यार्थियों के खोले बैंक खाते

सिरसा। राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय, चत्तरगढ़ पट्टी में नए विद्यार्थियों के लिए बैंकिंग सुविधाओं को सुनिश्चित करने के लिए इंडियन ओवरसीज बैंक के कर्मचारियों ने विशेष शिविर का आयोजन किया। इस दौरान बैंक टीम ने मौके पर ही 48 बच्चों के बैंक खाते खोले। यह प्रयास शिक्षा विभाग की योजनाओं को जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू करने का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। स्कूल प्रभारी बंसी लाल झोरड़ ने बताया कि विद्यालय टीम के निरंतर प्रयासों का ही परिणाम है कि पिछले मात्र 15 दिनों में 110 नए विद्यार्थियों का दाखिला हुआ है।

गोशाला मोहल्ला स्कूल में छात्रों को बांटी स्टेशनरी

सिरसा। बाबा सरसाईनाथ सेवा ट्रस्ट ने गुरु तेग बहादुर के जन्मदिवस पर सरकारी स्कूल गोशाला मोहल्ला के विद्यार्थियों को स्टेशनरी वितरित की गई। कार्यक्रम में मुख्यातिथि चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुनील शर्मा थे। कुलसचिव डॉ. सुनील शर्मा ने कहा कि धैर्य, वैराग्य और त्याग की मूर्ति गुरु तेग बहादुर ने दशकों तक साधना की थी। उन्हें हिंद की चादर इसलिए कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने कश्मीरी पंडितों और अन्य लोगों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए औरंगजेब के अत्याचारों के सामने अपना शीश कटा दिया था, लेकिन धर्म परिवर्तन स्वीकार नहीं किया।

युवा पीढ़ी तार्किक शक्ति विकसित कर संस्कृति संरक्षण में दे योगदान: विजय कुमार

सिरसा। युवा पीढ़ी को अपने भीतर तार्किक शक्ति का विकास करना चाहिए तथा अपनी छिपी हुई प्रतिभा को पहचान कर उसे निखारना चाहिए। कला एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार में युवाओं की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। ये विचार क्षेत्रीय संगठन मंत्री संस्कार भारती, विजय कुमार ने व्यक्त किए। कुलगुरु प्रो. विजय कुमार ने कहा कि कल्पना और कला मानव जीवन को नई दिशा देने वाली सृजनात्मक शक्तियां हैं। शिक्षा तभी सार्थक होती है जब विद्यार्थियों में रचनात्मक सोच, संवेदनशीलता और अभिव्यक्ति का विकास हो।

महिला आरक्षण बिल पर कांग्रेस के रुख को लेकर उठे सवाल: वेद

- चेयरमैन वेद फूलां का आरोप : महिलाओं के अधिकारों के मुद्दे पर पार्टी का रुख विरोधाभासी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

वेद फुलां।

भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष, सिरसा जिला प्रभारी एवं हरकोफेड के चेयरमैन वेद फूलां ने महिला आरक्षण बिल को लेकर कांग्रेस पर गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होने कहा कि संसद में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने वाले विधेयक पर कांग्रेस का रुख उसके घोषित विचारों के विपरीत नजर आता है। उन्होंने इसे महिलाओं के अधिकारों के प्रति असंगत दृष्टिकोण बताते हुए कहा कि इससे पार्टी की नीतियों और व्यवहार के बीच अंतर स्पष्ट होता है। चेयरमैन ने कहा कि कांग्रेस लंबे समय से सार्वजनिक मंचों पर महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण की बात करती रही है, लेकिन जब उन्हें राजनीतिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए ठोस कदम उठाने का अवसर मिला, तब उसका समर्थन नहीं किया गया। उनके अनुसार यह स्थिति दर्शाती है कि राजनीतिक बयानबाजी और वास्तविक निर्णयों में अंतर बना हुआ है, जिसे अब जनता भी समझने लगी है।

एसपी खट्टर ने उत्कृष्ट कार्य करने वाले पुलिसकर्मियों को पत्र देकर किया सम्मानित

- निरीक्षक साधुराम, उप निरीक्षक सुरेश हुए पुरस्कृत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

फतेहाबाद। पुलिस कर्मचारियों को सम्मानित करते एसपी निकिता खट्टर।

पुलिस अधीक्षक निकिता खट्टर द्वारा जिला पुलिस के उन अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने अपने कर्तव्य निर्वहन में उत्कृष्ट कार्य करते हुए विभाग का नाम रोशन किया। सम्मानित किए गए पुलिसकर्मियों में निरीक्षक साधु राम, उप निरीक्षक सुरेश थाना प्रभारी जाखल, उप निरीक्षक रमेश कुमार, सहायक उप निरीक्षक श्रवण, सहायक उप निरीक्षक जय सिंह, सहायक उप निरीक्षक सुशील कुमार, पीएसआई सुमित, महिला मुख्य सिपाही सुमित्रा, मुख्य सिपाही संदीप, सिपाही विनोद कुमार, सिपाही वरुण कुमार, सिपाही प्रदीप तथा होमगार्ड कृष्ण शामिल हैं। एसपी ने कहा कि पुलिस विभाग में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मियों का सम्मान करना अन्य कर्मचारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के सम्मान से पुलिस बल का मनोबल बढ़ता है और वे और अधिक लगन व प्रतिबद्धता के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं।

लर्निंग लाइसेंस के लिए रेडक्रॉस का फर्स्ट एड प्रशिक्षण अनिवार्य, शुल्क 300 रुपये निर्धारित

सिरसा। लर्निंग लाइसेंस बनवाने की प्रक्रिया को अधिक सरल और जागरूक बनाने के उद्देश्य से जिला रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा एक दिवसीय बेसिक फर्स्ट एड प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। यह प्रशिक्षण सडक़ सुरक्षा के साथ-साथ आपातकालीन परिस्थितियों में प्राथमिक उपचार की जानकारी देने के लिए बेहद उपयोगी साबित हो रहा है। यह प्रमाण पत्र केवल वाहन चालक लाइसेंस के लिए ही वैध होगा। इस प्रशिक्षण को इच्छुक आवेदक ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से प्राप्त कर सकते हैं। आवेदन करने के लिए उम्मीदवारों को हरियाणारेडक्रॉसडॉटइन वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन पंजीकरण करना अनिवार्य है। प्रशिक्षण का शुल्क 300 रुपये निर्धारित किया गया है। प्रशिक्षण पूरा करने के बाद प्रतिभागियों को बेसिक फर्स्ट एड का प्रमाण पत्र जारी किया जाता है, जो लर्निंग लाइसेंस बनवाने में सहायक होता है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 9315429403, 8291554800, 7988727916

स्लोगन राइटिंग में शिवानी व पत्र लेखन में दामिनी ने पाया प्रथम स्थान

सीडीएलयू के 'कलरव' फेस्ट में एमएम कॉलेज के विद्यार्थियों का दबदबा

विज्ञापन लेखन में रिया व ऑन स्टेज गतिविधि में कॉलेज टीम द्वितीय

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद।

फतेहाबाद। विजेता छात्रों को बधाई देते एमएम कॉलेज प्राचार्य डॉ. गुरचरण दास।

चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय सिरसा के अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'कलरव' फेस्ट में फतेहाबाद के एमएम कॉलेज के विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए शानदार प्रदर्शन किया। इस उत्सव में विभिन्न ऑफ-स्टेज और ऑन-स्टेज प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था, जिसमें एमएम कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने कई प्रमुख श्रेणियों में शीर्ष स्थान हासिल किए। कॉलेज के विद्यार्थियों ने नितिन सचदेवा, भारती और प्रीत के मार्गदर्शन में इस फेस्ट में हिस्सा लिया। एमएम कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा अनेक प्रतियोगिताओं में उपलब्धियां दर्ज की गई। स्लोगन राइटिंग में एमएम कॉलेज की शिवानी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया वहीं पत्र लेखन में दामिनी ने पहला स्थान हासिल कर कॉलेज का नाम रोशन किया। विज्ञापन लेखन रिया बंसल द्वितीय स्थान पर रही वहीं नाटक में कॉलेज की टीम ने ऑन-स्टेज गतिविधि में दूसरा स्थान पाया।

रवि रहे तृतीय

कैप्शन राइटिंग हिंदी में कॉलेज के रवि कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा काव्य पाठ में मन्नत कौर तीसरे स्थान पर रही। सोसायटी के चेयरमैन आत्मप्रकाश बत्रा, प्रधान राजीव बत्रा, उपप्रधान अशोक तनेजा, सचिव विनोद मेहता एडवोकेट, कोषाध्यक्ष कैलाश बत्रा, बीएड कॉलेज के उपप्रधान संजय बत्रा, मैनेजमेंट सदस्य नीरज शर्मा, उषा दहिया ने विजेता छात्र-छात्राओं को उनकी सफलता पर बधाई दी। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गुरचरण दास ने अव्वल रहे विद्यार्थियों की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के मंच विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और उनकी छिपी हुई प्रतिभा को निखारने के लिए बेहद आवश्यक हैं।

नवोदय विद्यालय ने जूडो में जीते 15 गोल्ड

ओढां। नवोदय विद्यालय समिति के अंतर्गत संचालित पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय ओढ़ा में आयोजित संभागीय स्तरीय जूडो एवं संकुल स्तरीय योगा प्रतियोगिता संपन्न हो गई। जूडो प्रतियोगिता में जवाहर नवोदय विद्यालय के प्रतिभागियों ने 15 गोल्ड मेडल जीतकर चैंपियनशिप हासिल की। इस प्रतियोगिता में विभिन्न नवोदय विद्यालयों से आए प्रतिभागी विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए उत्कृष्ट खेल कौशल एवं योग प्रदर्शन का परिचय दिया। जूडो मुकाबलों में खिलाड़ियों ने अनुशासन, तकनीक एवं साहस का शानदार प्रदर्शन किया वहीं योग प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने शारीरिक संतुलन, लचीलापन एवं मानसिक एकाग्रता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

केवल धरती पर ही जीवन संभव है, यह जानने के बावजूद जाने-अनजाने हम धरती को तरह-तरह से नुकसान पहुंचा रहे हैं। दुनिया भर के वैज्ञानिक मानते हैं कि सौरमंडल के सबसे खूबसूरत ग्रह धरती को बचाना किसी एक सरकार या संगठन का काम नहीं, बल्कि हम सबकी जिम्मेदारी है। हमें जागरूक होना होगा, बदलाव के छोटे-छोटे कदम उठाने होंगे, तभी आने वाली पीढ़ियों के लिए हम अपनी प्यारी धरती को सुरक्षित रख पाएंगे।

विशेषः पृथ्वी दिवस
22 अप्रैल

हम सब मिलकर बचाएं अपनी प्यारी धरती

आवरण कथा / रजनी अरोड़ा

धरती जीवन का आधार है, जो एक निःस्वार्थ मां की तरह मानव के लिए अनुकूल, सुंदर प्राकृतिक वातावरण ही प्रदान नहीं करती। उसकी मूलभूत जरूरतें (भोजन, पानी, हवा, वस्त्र, घर) भी मुहैया कराती है। विडंबना है कि मनुष्य अपने विकास और सुख-सुविधाएं पाने की अंधाधुंध दौड़ में जाने-अनजाने इसी धरती को सबसे अधिक नुकसान पहुंचा रहा है। दिनों-दिन बढ़ते मानव अतिक्रमण की वजह से जहां प्राकृतिक संसाधनों की निरंतर कमी का सामना करना पड़ रहा है, वहीं कई घरेलू-व्यावसायिक कार्य-कलाप वायुमंडल में कार्बन उत्सर्जन यानी कार्बन डाई-ऑक्साइड और अन्य ग्रीन हाउस गैसों का लेवल निरंतर बढ़ाने में जिम्मेदार हैं। नासा और इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) की रिसर्च के अनुसार पिछले 150 वर्षों में धरती का औसत तापमान लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। इसका असर केवल प्रकृति पर ही नहीं, बल्कि खेती, पानी, मानव स्वास्थ्य और जीव-जंतुओं के जीवन पर भी पड़ रहा है। इन संकटों से अपनी धरती को बचाने के लिए हम सभी को अपने स्तर पर हर संभव प्रयास करने होंगे।

पर्यावरण की करें सुरक्षा

धरती को बचाने के लिए सबसे जरूरी है पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होना, अच्छी आदतें अपनाना, बच्चों और दूसरों को भी प्रेरित करना। परिवार में ग्रीन रूल बनाएं और उन्हें अमल करने के लिए सजग रहें। पर्यावरण नीतियों को लेकर सचेत रहें। अपने इलाके में हरित नीतियां (पेड़ लगाने, कचरा प्रबंधन और सार्वजनिक परिवहन सुधार) लागू करवाने की मांग करें। पर्यावरण संगठनों से जुड़ें।

घर को बनाएं ग्रीन होम

घर में ऊर्जा की खपत, कार्बन उत्सर्जन का सबसे बड़ा कारण है। ऊर्जा संरक्षण के लिए जब जरूरत न हो तो कमरे की लाइट, पंखे बंद कर दें। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जब यूज न कर रहे हों तो स्विच ऑफ कर दें। स्टैंडबाय में भी बिजली खर्च होती है। दिन में प्राकृतिक रोशनी का अधिक उपयोग करें। साधारण बल्ब की तुलना में एलईडी बल्ब 75 प्रतिशत कम बिजली खर्च करता है और 10 गुना अधिक चलता है। यह छोटा बदलाव बिजली का बिल कम करता है और कार्बन उत्सर्जन भी। पुराने एसी, फ्रिज और वॉशिंग मशीन बहुत अधिक बिजली खर्च करते हैं। 5 स्टार रेटिंग वाले उपकरण खरीदें। इनसे 30-40 प्रतिशत बिजली बचती है। घर की छत पर सोलर पैनल लगवाना या किसी अक्षय ऊर्जा प्रदाता की मदद से बिजली लेना काफी कारगर है। यह वन-टाइम इंवेस्टमेंट है, जो आने वाले तकरीबन 25 साल तक मुफ्त बिजली देता है। सरकार इसमें सब्सिडी भी देती है। एसी को 24-25 डिग्री पर ही चलाएं। हर एक डिग्री कम करने पर 6 प्रतिशत अधिक बिजली खर्च होती है।

घर की एयर सीलिंग यानी दरवाजों और खिड़कियों की दरारें बंद करना, ऊर्जा बचत का सबसे किफायती तरीका है। इससे गर्मियों में ठंडक और सर्दियों में गर्माहट बनी रहती है और हीटिंग-कूलिंग का खर्च 15-30 प्रतिशत तक कम हो जाता है। घर में गैस या कोयले की जगह इलेक्ट्रिक हीट पंप लगाने से कार्बन फुटप्रिंट में 100 किलो कार्बन डाई-ऑक्साइड प्रति वर्ष की कमी आ सकती है। वॉशिंग मशीन हमेशा फुल लोड पर चलाएं। पानी का टेंपरेचर नॉर्मल रखें। पानी गर्म करने में एनर्जी की खपत 75-90 प्रतिशत बढ़ जाती है यानी बिजली का बिल बढ़ जाता है। इसी तरह कपड़े क्लॉथ-ड्रायर में सुखाने के बजाय बाहर धूप या खुली हवा में सुखाएं, क्योंकि वॉशिंग मशीन का क्लॉथ-ड्रायर घर में इस्तेमाल होने वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (जैसे- फ्रिज, टीवी, डिशवॉशर, एसी, लैपटॉप से कहीं ज्यादा बिजली खर्च करता है।

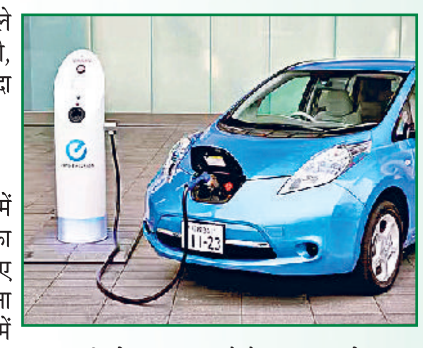

भोजन ना करें वेस्ट

दुनिया के कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में लगभग 26 प्रतिशत भाग खाद्य उत्पादन का रहता है। इसलिए खाने को वेस्ट ना करें। दुनिया में उत्पादित खाने का एक-तिहाई हिस्सा बर्बाद होता है। यानी खाद्य पदार्थ उगाने में लगा पानी, बिजली और मेहनत, सब बेकार। ऐसे में जरूरत के अनुसार ही खाना बनाना चाहिए। अगर खाना बचता भी है तो उसे फेंकने के बजाय अगले मील में खा लें या जरूरतमंद को दे दें।

सिंगल-यूज प्लास्टिक है हार्मफुल

आज प्लास्टिक-प्रदूषण की समस्या बहुत गंभीर हो चुकी है। इससे बचने के लिए सिंगल-यूज प्लास्टिक की चीजों (पॉलिथीन, प्लास्टिक कप, स्ट्रॉ, बर्तन) का प्रयोग कम से कम करें। कपड़े का थैला, स्टील की बोतल और हर्बल टूथब्रश अपनाएं। पानी के लिए रियूज होने वाली बोतल का इस्तेमाल करें।

कार्यस्थल में रखें ध्यान

अपने कार्यस्थल पर भी छोटे-छोटे प्रयासों से धरती को संरक्षित करने में अपना सहयोग आप दे सकते हैं। एंवॉयर्नमेंट फ्रेंडली सामग्री, एलईडी लाइट, ऊर्जा बचाने वाले उपकरण और कचरे का उचित प्रबंधन वाले उपकरणों का यूज करें। कागज की जगह डिजिटल दस्तावेज उपयोग करें। प्रिंट करना जरूरी हो तो पेपर के दोनों तरफ प्रिंट करें। व्यावसायिक मुद्दों पर परिचर्चा करने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग को बढ़ावा दें ताकि समय और ऊर्जा की बचत हो। ऑफिस जाने के लिए अकेले कार ड्राइव करके जाने के बजाय कारपूल की आदत डालें। यानी एक गाड़ी में 4 लोग जाएं तो कार्बन उत्सर्जन 75 प्रतिशत कम होता है। मेट्रो, बस, ट्रेन जैसे सार्वजनिक परिवहन में सफर करें। अगर नई गाड़ी खरीदनी हो तो इलेक्ट्रिक वाहन खरीदें। इसमें सब्सिडी भी मिलती है। इससे पेट्रोल-डीजल पर निर्भरता तो कम होगी ही, प्रदूषण भी कम होगा। कम दूरी के लिए साइकिल या पैदल चलने की आदत डालें। पर्यावरण के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी बेहतरीन है।

अधिक से अधिक पेड़ लगाएं

पेड़-पौधे धरती को खूबसूरत हरा-भरा ही नहीं बनाते, भूमि में कटाव कम कर मजबूती लाने, भूमि की उर्वरता बढ़ाने, पर्यावरण को प्रदूषण रहित रखने में भी मदद करते हैं। हमें जीवनदायी ऑक्सीजन देते हैं और अपने जीवनकाल में तकरीबन 1 टन कार्बन डाई-ऑक्साइड सोखते हैं। आप अपने जन्मदिन, शादी की सालगिरह या किसी भी खास मौके पर पेड़-पौधे लगाने की परंपरा शुरू कर सकते हैं। कॉरपोरेट ट्री प्लांटेशन ड्राइव में शामिल होकर विभिन्न प्रजाति के पेड़-पौधे लगाकर ऑफिस कंपाउंड में हरियाली बढ़ाएं। हमारे ऐसे प्रयासों से भी धरती पर हरियाली बढ़ेगी। *

जल संरक्षण भी है जरूरी

जलवायु परिवर्तन से पानी का संकट भी धरती पर बढ़ता जा रहा है। दुनिया के कई देशों समेत भारत के कुछ राज्यों में भी भूजल स्तर तेजी से गिर रहा है। जल संरक्षण के लिए भी हम कुछ प्रयास कर सकते हैं। जैसे-ब्रश करते समय नल बंद रखना, कम समय में नहाना और टपकते नलों को ठीक करवाना। ऐसी छोटी-छोटी आदतें मिलकर हजारों लीटर पानी बचा सकते हैं। घर की छत पर वर्षा जल संग्रह प्रणाली लगाएं। यह पानी बगीचे, गाड़ी धोने और फ्लश के लिए उपयोग हो सकता है। बाजार में ऐसे नल उपलब्ध हैं, जो 50 प्रतिशत तक कम पानी उपयोग करते हैं लेकिन दबाव उतना ही रहता है। इससे पानी की बचत होती है। दुनिया के समुद्रों, नदियों में बेशुमार प्लास्टिक जमा हो चुका है। धरती पर मौजूद जल को संरक्षित करने के लिए हमें सजग होना होगा।

केवल एक दिन ही नहीं रोज मनाएं पृथ्वी दिवस

विगत कई दशकों से हम जाने या अंजाने अपनी धरती को नुकसान पहुंचाते आ रहे हैं। आज धरती के अस्तित्व पर ही संकट मंडराने लगा है। ऐसे में अब यह हमारी ही जिम्मेदारी है कि पृथ्वी संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास करें। हर वर्ष मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस, हम सबको यही संदेश देता है।

अवेयरनेस
लोकमित्र गौतम

धरती हम सभी के जीवन का आधार है। लेकिन विडंबना देखिए कि हम सब धरतीवासी इसे ही सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा रहे हैं। ऐसे में हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस, केवल एक तारीख भर नहीं है बल्कि समूचे मानव समुदाय को एक चेतावनी और सामूहिक संकल्प का प्रतीक भी है।

इस दिन की महत्ताः पृथ्वी दिवस हमें याद दिलाता है कि विकास की अंधी दौड़ में हम अपनी जड़ों को ही नष्ट करते जा रहे हैं। बढ़ता प्रदूषण, घटते जंगल और दिनोंदिन डराता जलवायु परिवर्तन, ये सब संकेत हैं कि हमें अपनी सोच और पृथ्वी मां के साथ किए जाने वाले अपने व्यवहार को बदलने की जरूरत है। पृथ्वी दिवस हमें इस बात की भी प्रेरणा देता है कि हमारे छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां आसानी से निभ सकती हैं ताकि आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित पृथ्वी, एक स्वच्छ वातावरण और संतुलित पर्यावरण मिल सके।

पृथ्वी दिवस की शुरुआतः पृथ्वी दिवस की शुरुआत पिछली सदी में 1970 में हुई थी। इसके पीछे उस समय की वैश्विक स्थितियां जिम्मेदार हैं। सन् 1960 के दशक में अमेरिका सहित दुनिया के कई हिस्सों में औद्योगीकरण तेजी से बढ़ रहा था, लेकिन पर्यावरण संरक्षण पर कोई खास ध्यान नहीं दिया जा रहा था। नदियां प्रदूषित हो रही थीं, हवा दिन पर दिन जहरीली हो रही थी और जैव-विविधता लगातार खतरे में थी। इसी सबको देखते हुए अमेरिकी सीनेटर गेलॉर्ड नेल्सन ने पर्यावरण के प्रति जन-जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से 22 अप्रैल 1970 को पृथ्वी दिवस का आयोजन किया। इस दिन करीब 2 करोड़ लोग सड़कों पर उतरे और पर्यावरण संरक्षण की मांग की। यह एक ऐतिहासिक जन-आंदोलन बन गया। इसके बाद धीरे-धीरे यह विभिन्न वैश्विक अभियानों में बदल गया और आज दुनिया भर के 190 से ज्यादा देश पृथ्वी दिवस मनाते हैं।

अधिक प्रासंगिक है आजः पृथ्वी दिवस की प्रासंगिकता, इसके शुरू किए जाने के समय से कहीं ज्यादा आज है। हम जिन समस्याओं विशेषकर पर्यावरणीय समस्याओं का आज सामना कर रहे हैं, इससे पहले ये कभी इस कदर भयानक नहीं थीं। बढ़ते तापमान, पिघलते ग्लेशियर आज जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण हैं। दिल्ली जैसे शहरों की हवा प्रदूषण के कारण इस कदर जहरीली है कि दुनिया के कई स्वास्थ्य संगठन कह चुके हैं कि दिल्ली में पूरी जिंदगी गुजारने का मतलब है, अपनी जिंदगी के 10 साल कम कर लेना। लगभग यही हाल जल संकट के मामले में भी है। किसी एक देश में नहीं बल्कि पूरी दुनिया आज जल संकट से गुजर रही है। अगर बात वनों के विनाश या जैव-विविधता के नुकसान की करें तो जितना कहें, वह कम होगा। तमाम चेतावनियों और वैज्ञानिक अध्ययनों से निकले निष्कर्षों के बावजूद हर साल दुनिया से लाखों हेक्टेयर जंगल खत्म हो रहे हैं। यह गंभीर चिंता का विषय है।

वैश्विक है संकटः पृथ्वी में हर तरीके के सकारात्मक वातावरण के क्षरण का यह संकट किसी एक देश का संकट नहीं है, दुनिया के हर हिस्से में यही हो रहा है। अपवाद के तौर पर अगर कुछ देश इस विनाश के हिस्सेदार नहीं हैं, तो दूसरों के कारण उन्हें इसकी सजा भुगतनी पड़ रही है। जहां तक अपने देश भारत का सवाल है, तो हमारे यहां तेजी से बढ़ते शहरीकरण के कारण पर्यावरण पर बहुत गहरा दबाव है। खेती में रासायनिक उर्वरकों की अधिकता और लगातार मिट्टी के अनुर्वरक होते जाने के कारण फसलों का खाद पर ज्यादा से ज्यादा निर्भर होते जाना, जहां चाहकर भी मृदा प्रदूषण से हम बच नहीं सकते, वहीं नदियों का प्रदूषण भी दिनोंदिन गहराता जा रहा है। हालांकि हाल के दिनों में हमारे देश में कई सकारात्मक पहलें भी देखने को मिली हैं। मसलन सौर ऊर्जा मिशन के बढ़ते कदम, प्लास्टिक प्रतिबंध के आधे-अधूरे ही सही पर लगातार बार-बार चलाए जाने वाले अभियान, किचन गार्डेनिंग और ऑर्गेनिक खेती के हो रहे प्रयास, ये दिखाते हैं कि अगर इच्छाशक्ति हो तो धरती को बर्बाद होने से हम सब सामूहिक प्रयासों से बचा सकते हैं।

छोटे कदम भी हैं महत्वपूर्णः पृथ्वी दिवस की सार्थकता तभी होगी, जब हर आदमी आगे बढ़कर इसके संरक्षण में अपना योगदान देगा। अगर हम लोग संकल्प ले लें कि रोजमर्रा की जिंदगी में प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेंगे, पानी, बिजली की अंधाधुंध बर्बादी नहीं करेंगे, पेड़ लगाएंगे और लगे हुए पेड़ों की देखभाल करेंगे, तो इतना भर करने से ही पृथ्वी के सामने जो समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं, इनमें से आधी खत्म हो जाएंगी और अगर सरकार, विभिन्न संस्थाएं और समाज इसके विरुद्ध उठ खड़ा हो तब तो तमाम परेशानियों से मुक्त हो सकते हैं। *

कविता
घमंडीलाल अग्रवाल

मेरा गांव

मिट्टी में मुक्तक मिलते हैं
गलियों-गलियों गीत,
गाय-भैंस के रंभाने में
कविता और अगीत।
छप्पर ऊपर की खपरैलें
अर्पण करती लेख,
टेढ़ी पगडंडियां खींचती
उपन्यास की रेख।
जन-जन की बोली उपजाती
मधुर हास्य की गंध,
पहनावों में पहेलियों के
कई संकलन बंद।
नूतन प्रेमकथा देने की
पनघट ने ली ठान,
शेर, गजल, गीतिका लुटाती
अधरों की मुस्कान।
यहां रहट की ध्वनियां देतीं
एकांकी के भाव,
लेखक, कथाकार, कवि, शायर
लोगो, मेरा गांव।

व्यंग्य / पूरन सरमा

बस हो या रेल सब में दुर्जन यात्रा कर रहे हैं, वे आएंगे और आपकी सज्जनता का लाभ उठाकर आपकी सीट हथिया लेंगे। आप खड़े-खड़े परेशान होते रहेंगे और दूसरा सहयात्री पूरी सीट पर पांव फैलाकर बैठा रहेगा।

त्याग दीजिए नैतिकता

हालांकि आप अब तक नैतिकता का त्याग कर ही चुके होंगे, लेकिन यदि नहीं किया है तो नेक सलाह मानकर इसे अविलंब त्यागिए। इसमें बंधे रहना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। त्याग और बलिदान का युग नहीं है यह। यह युग घोर स्वार्थ-परकता, अन्याय, छल, कपट तथा प्रपंच का है। आपने थोड़ी-सी भी शालीनता बरती कि गए काम से। नैतिकता से आदमी में निष्ठा, लगन व मेहनत के भाव जन्म लेते हैं और ये भाव अब गिर चुके हैं। इन भावों को अपनाने से आदमी का पतन होता है तथा लोककल्याण की चक्की में पिसकर नष्ट हो जाता है। श्रद्धा, आदर्श, परोपकार एवं ईमानदारी जैसे शब्द अब महत्त्व खो चुके हैं। इनके अर्थ समझने की कोशिश मत करिए। वैसे तो शब्दकोषों के जो नए संस्करण आएंगे, उनमें आपको ये शब्द ही नहीं मिलेंगे। इसलिए नैतिकता को त्यागिए और स्वार्थ की अंधी दौड़ में शरीक हो जाइए, तब तो आपकी नैया इस भवसागर से पार हो जाएगी, अन्यथा इसी में डुबकी लगाते रहेंगे।

दफ्तर में जिस व्यक्ति के पास जरा-सी भी नैतिकता है, बस वही तकलीफ पा रहा है। वर्ना दूसरे तमाम लोग बाहर गुमटियों पर चाय-समोसे उड़ा रहे हैं, पान की पीकें उगल रहे हैं। आपने ही कौन-सा च्यवनप्राश खाया है, जो सारा कौशल दिखाकर पूरे दफ्तर के कार्य को निपटाना चाहते हैं। काम मत कीजिए, बस बात कीजिए। वेतन काम करने का नहीं, ऑफिस में हाजिरी लगाने का मिलता है, वह आप कर ही देते होंगे। काम करने के लिए घूस, रिश्वत तथा भेंट आदि का चलन है। भ्रष्टाचार किसलिए फैलाया गया है? बस इनका लाभ उठाइए। यह लाभ उठाने के लिए होता है, त्यागने के लिए नहीं। वेतन तो उन लोगों को भी यथासमय मिल रहा है, जो काम नहीं करते, फिर आपको कौन-सा हार्ड ड्यूटी एलाउंस मिल रहा है। यह आपकी नैतिकता ही तो है, जो आपको चैन नहीं लेने देती। नैतिकता बड़ी खराब है, जिसमें एक बार घुस जाए, निकलने का नाम ही नहीं लेती है। मेरी तमाम सज्जनों से अपील है कि वे आपनी सज्जनता को त्यागें। युग बड़ा खराब है, सब घात लगाए बैठे हैं। आपको गच्चा देने की फिराक में है दुनिया। दुर्जनता को अपनाइए, आपकी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। समस्याओं के पहाड़ तैयार करने हैं तो सज्जन बने रहिए। यकीन न हो तो अभी आप सज्जनता के पक्ष में जनमत संग्रह करवाकर देखिए, आप अकेले रह जाएंगे। अगर यह सोचते होंगे कि यूनियन बना लेंगे, तो यह भी दिवास्वप्न है। वैसे यूनियनबाजी सज्जन आदमी कर भी नहीं सकता। इसके लिए भी आपको घाट-घाट का पानी पीने के बाद सज्जनता का पाजामा हर हालत में उतार कर फेंकना होगा। जो आदमी युग की नब्ज नहीं पहचानता, वह पछताता है। यदि आप पछताने का चाव रखते हैं तो जरूर, नैतिकता को अपनाए रहें।

सज्जनता आपके भीतर होगी तो आप पब्लिक ट्रांसपोर्ट में कोई भी यात्रा आराम से नहीं कर सकेंगे। यात्रा के दौरान आपके पास जब भी कोई महिला आएगी तो खड़े होकर आप उसे बैठने को स्थान दे देंगे। अब आप खड़े रहिए, घंटे-दो घंटे। बस हो या रेल सब में दुर्जन यात्रा कर रहे हैं, वे आएंगे और किसी न किसी तरह आपकी सज्जनता का लाभ उठाकर आपकी सीट हथिया लेंगे। आप में शालीनता, विनम्रता और सदाशयता कूट-कूट कर जो भरी है, उसी का परिणाम है कि आप खड़े-खड़े परेशान होते रहेंगे और दूसरा सहयात्री पूरी सीट पर पांव फैलाकर बैठा रहेगा। आपकी हिम्मत नहीं होगी कि आप उससे यह कह दें कि वे अपने पांव समेट लें। काश, इस समय आपके पास दुर्जनता होती, लफंगई होती तो आपको सीट मिल जाती। शिष्टाचार इस युग की घोर बुराई है। आप बुराई अपनाते हैं तो यह मूर्खता नहीं तो और क्या है?

मेरी तो यही सलाह है कि आप में जो भी उच्च संस्कार बतौर इंसानियत के पैदा हो गए हैं, उन्हें अपने वैयक्तिक जीवन के हित संरक्षण के लिए अविलंब त्याग दीजिए। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

चंडीदत्त रचना-समग्र

अपने छोटे से जीवन में ही चंडीदत्त शुक्ल ने पत्रकारिता के साथ साहित्य लेखन में भी अलग पहचान बना ली थी। उनकी उपलब्ध अठहत्तर कविताओं, कहानियों और साक्षात्कार का संकलन 'चंडीदत्त रचना समग्र' पुस्तक के रूप में हाल में प्रकाशित हुआ है। इन रचनाओं से गुजरते हुए उनकी साहित्य की गहरी समझ और नई दृष्टि से रचने की प्रतिभा प्रमाणित होती है। 'जब मन का हर डर मर जाए', 'हंसती खेलती औरत', 'सो जाओ कि रात बहुत गहरी है' जैसी अनेक कविताएं और 'फिर आना अखिलेश और हंसना जोर-जोर से..', 'एक आंसू गुनगुनाता रहा रात भर' जैसी कहानियां उनके क्रिएटिव रेंज की तस्दीक करती हैं। पुस्तक में संकलित साक्षात्कार में उन्होंने अपने आरंभिक जीवन और साहित्यिक सरोकार पर बेबाक विचार भी व्यक्त किए हैं। साहित्य से आम लोगों की बढ़ती दूरी के बारे में चंडीदत्त के यह विचार ध्यान देने योग्य हैं, 'इन दिनों बहुतेरा साहित्य अमूर्त भाषा और भाव के साथ लिखा जा रहा है, जिससे जुड़ पाना सामान्य पाठक के बस का नहीं है।' *

पुस्तकः चंडीदत्त रचना-समग्र, **संपादकः** डॉ. शैलेंद्र नाथ मिश्र-राजेश ओझा, **मूल्यः** 299 रुपए, **प्रकाशकः** श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, नोएडा

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

मजदूर

भाई साहब पिछले हफ्ते जिस लड़की को हम लोग देखने गए थे, उस लड़की का सिविल सेवा में चयन हो गया है। अब तो रिश्ता पक्का कर दीजिए।' गोपी बाबू के छोटे भाई ने कहा।

'नहीं छोटे, वह लड़की हमारे घर की कभी बहू नहीं बन सकती।' गोपी बापू ने कहा।

'क्यों भैया क्या दोष है उस बच्ची में?' छोटे ने पूछा। 'दोष उसमें नहीं उसके पिताजी में है।' गोपी बापू ने पलटकर कहा। 'कौन सा दोष.. कैसा दोष भैया?' 'उसके पिताजी हमारे ही कारखाने में मजदूर हैं।' नथुने फुलाते हुए गोपी बापू ने कहा। इस पर छोटे ने कहा, 'यह तो अच्छी बात है। मेहनती बाप की मेहनती बेटी अपने घर की बहू बनेगी।' छोटे भाई ने समझाया। 'नहीं छोटे, हम अपने मजदूर को अपने बराबर नहीं बैठा सकते। उसको अपना समधी नहीं बना सकते। उसके पसीने की बदबू हमारे बदन का इत्र नहीं बन सकती।' गोपी बापू ने दलील दी। उसी समय मोबाइल की घंटी बजी। उधर से आवाज आई, 'हैलो गोपी बाबू, सिटी अस्पताल आ जाइए तुरंत। आपके बेटे का एक्सीडेंट हो गया है।'

'अरे..अभी आया।' गोपी बापू ने माथे का पसीना पोंछा फिर घबराते हुए अस्पताल भागे। अस्पताल पहुंचकर जो दृश्य गोपी ने देखा, उसे देखते रह गए। दरअसल, वही मजदूर उनके लड़के को अपना खून दे रहा था, जिसको वे अपने बराबर बैठाना नहीं चाहते थे। *

हो सकता है आपने कुछ नेशनल पार्क और वाइल्ड लाइफ सेंक्चुरी की यात्रा की हो। लेकिन अगर आप दुनिया के सबसे अनूठे नेशनल पार्क का अनुभव लेना चाहते हैं तो आपको मणिपुर स्थित तैरते हुए नेशनल पार्क कीबुल लामजाओ की यात्रा करनी होगी। इस अनोखे नेशनल पार्क की विशेषताओं के बारे में जानिए।

दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ नेशनल पार्क कीबुल लामजाओ

टूरिस्ट प्लेस

समीर चौधरी

मणिपुर की लोकटक झील के दक्षिण हिस्से में कीबुल लामजाओ नेशनल पार्क यानी राष्ट्रीय उद्यान है, जोकि दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ नेशनल पार्क है। मणिपुर के विष्णुपुर जिले में, इंफाल से लगभग 50 किमी. की दूरी पर यह पार्क 40 वर्ग किमी. में फैला हुआ है और यह लुप्तप्राय संगाई हिरण (नृत्य करने वाला हिरण) का अकेला प्राकृतिक घर है। यह उद्यान न केवल पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था (मत्स्य पालन, जल विद्युत) के लिए भी मायने रखता है।

जैव-विविधता से भरपूर: कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, जैवविविधता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह अपनी विशिष्ट तैरती फुमदिस और यहां खास तौर से पाए जाने वाले संगाई हिरण के लिए भी विख्यात है। फुमदिस सड़ी-गली वनस्पतियों, मिट्टी और जड़ों का तैरता हुआ समूह होता है। यह झील के पानी के ऊपर तैरता रहता है, जिसमें 450 से अधिक जलीय वनस्पतियों की प्रजातियां, जंगली सूअर, हॉग हिरण, बड़ी भारतीय सिवेट जैसे जीव पाए जाते हैं। नवंबर से मार्च के बीच इस पार्क में प्रवासी पक्षी भी आते हैं, इसलिए यात्रा करने का यही सबसे अच्छा समय माना जाता है।

अपने-आप में अनूठा राष्ट्रीय उद्यान: कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, एक ऐसी जगह है, जहां प्रकृति ने अपने नियम नए सिरे से लिखे हैं, जिसकी वजह से नाजुक, तैरता हुआ एक अजूबा भूखंड बन गया है। इस अलौकिक लैंडस्केप में मणिपुर का नृत्य करने वाला संगाई हिरण घूमता हुआ दिखता है, जिसके तेज गति से दौड़ते कदम, तैरते घास के मैदान पर बहुत आकर्षक लगते हैं। एक जमाना था जब यह माना जाने लगा था कि संगाई हिरण विलुप्त हो गया है। ऐसे में यहां उनके बचे रहने की संभावना ने नई उम्मीद को जगाया है, दरअसल, अनोखी प्राकृतिक संरचना फुमदिस की स्थिरता का यहां के जीवों के लिए बहुत महत्व है। न सिर्फ हिरण के लिए बल्कि उस पूरे ईकोसिस्टम के लिए भी, जो पृथ्वी पर कहीं और है ही नहीं।

बढ़ रही नाचते हिरण की संख्या: सन् 1954 तक यह मान लिया गया था कि संगाई हिरण की प्रजाति लुप्त हो गई है। संगाई तैरते फुमदिस के अतिरिक्त कहीं भी जीवित नहीं रह सकता है। इसकी वजह शिकार और फुमदिस का खत्म होना माना गया। इसके लगभग दो दशक बाद सन् 1974-75 के बीच किए गए हवाई सर्वे के दौरान उम्मीद की किरण जागी। कीबुल लामजाओ के तैरते फुमदिस में लगभग 14 संगाई देखे गए, जिसकी वजह से इनके संरक्षण प्रयासों में नया जोश आया और सन् 1995 तक इनकी संख्या बढ़कर 155 हो गई, जो सन् 2016 में 260 तक पहुंच गई। तैरते फुमदिस पर संगाई की नजाकत भरी चाल ने ही इसे 'नाचते हिरण' का नाम दिया है।

इसलिए मिला राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा: संगाई की खोज के बाद ही भारत सरकार और मणिपुर की सरकार ने वन्यजीवन संरक्षण कानून 1972 के तहत 1977 में कीबुल लामजाओ को 'राष्ट्रीय उद्यान' (नेशनल पार्क) घोषित किया। संगाई हिरण और उसके प्राकृतिक आवास स्थल यानी फुमदिस के लिए यह कानूनी सुरक्षा जरूरी थी। संगाई केवल एक प्रजाति नहीं है बल्कि सांस्कृतिक जड़ों वाला पशु है, जिसने हजारों वर्षों के दौरान तैरते फुमदिस पर रहने के लिए खुद को ढाल लिया है और यह लैंडस्केप व मणिपुर के लोगों के बीच गहरे संबंध को प्रतिबिंबित करता है।

मौजूद हैं कई चुनौतियां: इस अनोखे राष्ट्रीय उद्यान के समक्ष कई इकोलॉजिकल चुनौतियां हैं। लोकटक हाइड्रोइलेक्ट्रिकल प्रोजेक्ट कृत्रिम रूप से पानी के स्तर को नियंत्रित करता है, जिससे फुमदिस चक्र बाधित होता है और यहां के तैरते हुए ईकोसिस्टम की स्थिरता के लिए खतरा उत्पन्न होता है। गौरतलब है कि कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान को परिभाषित करने वाला फीचर उसका तैरता इकोसिस्टम ही है, जो संगाई को जीवित रखने के लिए आवश्यक है। एक ताजा अध्ययन में मणिपुर के इस आइकॉनिक हिरण के भविष्य को लेकर गंभीर चिंताएं व्यक्त की गई हैं। क्लाइमेट चेंज की वजह से 2070 तक फुमदिस सिकुड़ जाएगा और जब फुमदिस नहीं होगा, तो संगाई का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा। *

फुमदिस से जुड़े दिलचस्प तथ्य

फुमदिस वनस्पति, मिट्टी आदि की तैरती हुई मोटी परत होती है, जोकि जलीय पौधों और अन्य चीजों से मिलकर हजारों वर्षों में तैयार होती है। यह संगाई एवं अन्य वन्यजीवों को चरने की जगह, प्रजनन स्थल और आवास प्रदान करती है। दिलचस्प यह है कि फुमदिस प्राकृतिक जल चक्र है यानी यह झील के तले तक डूब जाती है पौष्टिक तत्व जज्ब करने के लिए। फिर कुछ समय बाद ऊपर उठ जाती है। यह चक्र उसके बने रहने के लिए आवश्यक है। फुमदिस केवल वनस्पति का टुकड़ा नहीं है बल्कि जीवित स्ट्रक्चर है। यह एक मोटी परत होती है, जिस पर बड़े जानवर भी रहते हैं। इस पर जो घास उगती है वह पूरे साल यहां निवास करने वाले वन्य जीवों को आवश्यक पौष्टिक तत्व प्रदान करती है।

सेल्फ इंप्रूवमेंट

शिखर चंद जैन

कई बार लोग प्रतिभावान और क्षमतावान होते हुए भी एक सीमित दायरे से बाहर निकलकर कुछ बड़ा अचीव नहीं कर पाते। अगर लाइफ में कुछ बड़ा हासिल करना है तो अपनी क्षमताओं को पहचान कर उसे एक्सप्लोर करना जरूरी है। यह कैसे होगा, बता रहे हैं आपको।

अपनी छिपी स्ट्रेंथ को ऐसे करें एक्सप्लोर

हम अकसर अपने आपको एक मानसिक दायरे में बंद कर लेते हैं और फिर कुएं के मेंढक की तरह उस दायरे से बाहर निकलने की कोशिश ही नहीं करते। स्वयं द्वारा निर्मित अपनी मानसिक शारीरिक सीमाओं को अपनी वास्तविकता मान लेते हैं, जबकि वे केवल हमारे विचारों की उपज होती हैं। ऐसे में हम आगे नहीं बढ़ पाते। आगे बढ़ने और तरक्की करने के लिए जरूरी है अपनी क्षमता को एक्सप्लोर करना। इसका अर्थ है, अपने डर के पार जाना। जब आप स्वयं पर लगे 'लेबल' हटा देते हैं, तो आप पाते हैं कि आप उससे कहीं अधिक हैं, जितना आपने कभी सोचा था।

हमारे भीतर है असीमित क्षमता: हम अपनी क्षमताओं का केवल 10 प्रतिशत ही इस्तेमाल करते हैं। यह आपने अकसर पढ़ा या सुना होगा। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि बाकी 90 प्रतिशत क्षमता का क्या होता है? वह बिना उपयोग के ही व्यर्थ के कामों में जाया हो जाती है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि इंसानी दिमाग की क्षमता का कोई अंत नहीं है। कैरोल ड्वेक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'माइंडसेट' में बताती हैं, 'ग्रोथ माइंडसेट' के साथ, हम अपनी क्षमता को असीमित रूप से विकसित कर सकते हैं। जब हम यह मानते हैं कि हमारी बुद्धिमत्ता और प्रतिभा को मेहनत और सीखने के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है, तो हम अपनी सीमाओं को तोड़कर आगे बढ़ सकते हैं।' अब्राहम मैस्लो, जो मानवतावादी मनोविज्ञान के जनक माने जाते हैं, का मानना था कि हर इंसान में आत्म-वास्तविकीकरण की क्षमता होती है। यह वह अवस्था है, जहां हम अपनी पूरी क्षमता को पहचानते हैं और उसे हासिल करते हैं। उनके अनुसार, यह हम सभी की अंतर्निहित इच्छा होती है कि हम वह बनें, जो हम बनने के लिए सक्षम हैं।

लोगों का साथ लें: हमारी क्षमता केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। आधुनिक समाजशास्त्र के प्रमुख संस्थापकों में से एक एमिल दुर्खीम का मत है कि कि हम सामाजिक संबंधों और सहयोग के माध्यम से अपनी क्षमता को बढ़ा सकते हैं। हमारे आस-पास के लोग, हमारी संस्कृति और हमारा सामाजिक माहौल हमारी क्षमताओं को आकार दे सकते हैं। दूसरों की मदद लेने से ही नहीं, उनकी मदद करने से भी हमारी क्षमताएं बढ़ती हैं। प्रमुख समाजशास्त्री मैक्स वेबर का मानना था कि अनुशासित और केंद्रित मेहनत, जो कि एक सामाजिक गुण भी है, से हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं और अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं।

कैसे करें अपनी क्षमता को एक्सप्लोर: अपनी असीमित क्षमता को एक्सप्लोर करने के लिए सबसे पहले, यह विश्वास करें कि आप में कुछ भी हासिल करने की क्षमता है। कभी भी नई चीजें सीखना न छोड़ें। नई किताबें पढ़ें और निरंतर नए अनुभव प्राप्त करें। कभी भी हार न मानें। अपनी असफलताओं से सीखें और आगे बढ़ें।

दिमाग के लचीलेपन का इस्तेमाल करें: जीनियस पैदा नहीं होते, गहन अभ्यास से जीनियस बनते हैं। प्रतिभा विकसित की जा सकती है। हमारा दिमाग लचीला होता है। इसका नियमित उपयोग और दिमागी मशक्कत करने से इसकी क्षमता निरंतर बढ़ती है। इस संबंध में जिम क्विक अपनी बेस्ट सेलर पुस्तक 'लिमिटलेस' में लिखते हैं, 'अपने दिमाग को अपग्रेड करें, कुछ भी तेजी से सीखें और अपने असाधारण जीवन को अनलॉक करें।' उनका कहना है कि हम अपनी सोच (माइंडसेट), प्रेरणा (मोटिवेशन) और तरीकों (मेथड्स) में बदलाव करके अपनी दिमागी क्षमताओं को असीमित कर सकते हैं, जिसमें सीमाओं को चुनौती देना, नींद को प्राथमिकता देना और लगातार अभ्यास करना शामिल है, ताकि हम तेजी से सीख सकें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। मैं यह नहीं कर सकता, जैसे विचारों को 'मैं यह सीख सकता हूं' में बदलें। अपनी बुद्धि को स्थिर न मानें, यह बढ़ सकती है। *

अक्षय तृतीया विशेष

हिंदू पंचांग के अनुसार हर साल वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है अक्षय तृतीया का पर्व। मान्यता है कि इस दिन किए जाने वाले शुभ कार्यों का अक्षय फल मिलता है। इस पर्व की महत्ता, इससे जुड़ी परंपराओं और मान्यताओं पर एक दृष्टि।

शुभ कार्यों का अक्षय फल प्रदान करती अक्षय तृतीया

पर्व-संस्कृति

धीरज बसाक

भारतीय पंचांग में कुछ तिथियां पूरे जीवन-दर्शन को अपने भीतर समेटे रहती हैं। अक्षय तृतीया ऐसी ही एक विशिष्ट तिथि है, जो अक्षयता यानी कभी न समाप्त होने वाली ऊर्जा, पुण्य और समृद्धि का प्रतीक बनकर उभरती है।

धार्मिक-पौराणिक मान्यताएं: अक्षय तृतीया की तिथि का धार्मिक और पौराणिक आधार भी इसे विशेष बनाता है। मान्यता है कि इसी दिन भगवान विष्णु के अवतार श्री परशुराम जी का जन्म हुआ था, जो धर्म और न्याय की स्थापना के प्रतीक माने जाते हैं। यह भी मान्यता है कि इसी दिन वेदव्यास ने महाभारत की रचना आरंभ की थी, जो भारतीय सभ्यता के नैतिक और दार्शनिक आधारों को समझने का सबसे बड़ा ग्रंथ है और इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मित्र सुदामा द्वारा सच्चे भाव से दिए गए एक छोटे से दान के बदले उन्हें दो 'लोक' प्रदान कर दिए थे। इन सभी कथाओं का सार यही है कि निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म कभी नष्ट नहीं होता।

सिखाती है जीने का संतुलित तरीका: भारतीय संस्कृति में यह विचार बहुत गहराई तक समाया हुआ है कि संसार की हर भौतिक वस्तु नश्वर है। लेकिन सत्कर्म, करुणा और धर्म के फल अक्षय होते हैं। अक्षय तृतीया इसी शाश्वत सत्य का उत्सव है। यह तिथि हमें याद दिलाती है कि जीवन में किए गए अच्छे कर्म, दान, सद्भाव कभी व्यर्थ नहीं जाते, वे किसी न किसी रूप में अक्षय बने रहते हैं। यह हमें केवल पूजा-पाठ की संस्कृति ही नहीं सिखाती बल्कि जीवन जीने का एक संतुलित और संवेदनशील तरीका भी सिखाती है।

कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन: अक्षय तृतीया पर्व जिस समय मनाया जाता है, वह रबी की फसल के पकने का समय होता है। खेतों में सुनहरी बालियां लहलहा रही होती हैं और किसान अपनी नई फसल को भगवान को अर्पित करते हैं। यह केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं बल्कि मानव और प्रकृति के बीच संतुलन और सम्मान का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माता के रूप में देखा गया है और अक्षय तृतीया, प्रकृति के उस मातृत्व के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर भी है।

धार्मिक-सामाजिक-आर्थिक महत्व: अक्षय तृतीया के दिन सोना खरीदने की परंपरा केवल भौतिक समृद्धि का प्रतीक नहीं है बल्कि इस विश्वास का प्रतीक भी है कि आज किया गया निवेश भविष्य में स्थाई फल देगा। नए कार्यों की शुरुआत, गृह प्रवेश और विवाह आदि के लिए इस दिन को अत्यंत शुभ माना जाता है। विशेष बात यह है कि इस दिन किसी विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि पूरा दिन ही शुभ-मुहूर्त वाला होता है।

दान-पुण्य और सेवा का संदेश: अक्षय तृतीया का महत्व केवल सोने-चांदी, आभूषणों या अन्य भौतिक वस्तुओं की खरीदारी तक ही सीमित नहीं है। इस दिन अन्न, जल, वस्त्र और कलश के दान करने की भी प्रथा है। गर्मी के मौसम में जरूरतमंदों को पानी पिलाना, भूखों को भोजन कराना, इस दिन ये सभी कार्य अत्यंत पुण्यदायी माने जाते हैं। ये परंपराएं हमें सिखाती हैं कि समाज में समृद्धि तभी अक्षय हो सकती है, जब हर किसी का उसमें हिस्सा हो। अक्षय तृतीया इसी सांस्कृतिक दर्शन के संतुलन का नाम है, जो बताती है कि सिर्फ भौतिक प्रगति ही पर्याप्त नहीं है बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक विकास भी उतना ही जरूरी है।

शुभ कर्मों से मिलता है अक्षय फल: अक्षय तृतीया भारतीय संस्कृति की उस गहरी परंपरा से नाता रखती है, जहां धर्म, अर्थ, प्रकृति और समाज, चारों का सुंदर समन्वय होता है। यह तिथि हमें यह विश्वास दिलाती है कि हमारे कर्म सही दिशा में हैं, तो उनका फल कभी समाप्त नहीं होगा। वास्तव में यही अक्षयता का वास्तविक दर्शन है। एक ऐसा जीवन, जिसमें अच्छाई निरंतर प्रवाहित होती रहे। इस प्रकार देखें तो अक्षय तृतीया केवल एक पर्व नहीं बल्कि प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शन की आत्मा का मूल है, जो हमें सिखाती है- जो भी शुभ करो, वह सदा के लिए अक्षय हो जाता है। *

प्रवृत्ति

शाहिद ए. चौधरी

ज्ञान-संस्कृति-विचारों की नई खिड़की खोलती हैं किताबें

भले ही पढ़ने और लिखने की नई-नई तकनीकें विकसित हो चुकी हैं, लेकिन किताबें हाथ में लेकर पढ़ने का सुख अनोखा होता है। पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने और कॉपीराइट के प्रति जागरूक करने के लिए ही **23 अप्रैल को विश्व पुस्तक, कॉपीराइट दिवस** मनाते हैं। इस दिवस की महत्ता पर एक नजर।

किताबें खिड़की की तरह होती हैं, जिसमें से दिखाई देता है एक नया संसार। हर नए पृष्ठ के साथ किताबें परिचित कराती हैं- नए लोगों से, नई संस्कृतियों से और नए विचारों से। गांधीजी ने कहा था, 'विचारों के युद्ध में पुस्तक ही शस्त्र है।' शायद यही वजह है कि ई-बुक्स के इस दौर में भी अनेक लोगों को अच्छे कागज पर छपी, जिल्द में बंधी, किताब अपने हाथों में लेकर पढ़ना ही अच्छा लगता है। हालांकि ऐसे लोगों को शायद आज परंपरागत मूल्यों में यथास्थिति का पक्षधर माना जा सकता है। लेकिन इससे पुस्तकप्रेमियों को कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि किताबें पढ़ने की उनकी आदत जो बन गई है।

नई पीढ़ी हो रही किताबों से दूर

पढ़ने की प्रवृत्ति को लेकर एक पक्ष यह है कि रील्स और वीडियोज की आधुनिक चकाचौंध में गुम आज की पीढ़ी तो टेक्स्ट बुक्स की तुलना में नेट के वीडियो लेक्चर्स को वरीयता देती है। यह पीढ़ी किताब पढ़ने की बजाय ऑडियो-बुक्स को सुनना पसंद करती है। क्या पढ़ने और सुनने में समान एकाग्रता बनी रहती है और बराबर का ज्ञान मिलता है? इस पर बहस हो सकती है। बहरहाल, युवा पीढ़ी किताबों से जिस अंदाज से दूर हो रही है या उसे बंद कर रही है या उसे खोलना ही नहीं चाहती है, उस पर शम्स तबरेज का यह शेर याद आता है-

अजीब किस्म की उभरी थी शक्ल लफ्जों से
किताब बंद न करता तो डर गया होता।

इसलिए मनाते हैं विश्व पुस्तक दिवस

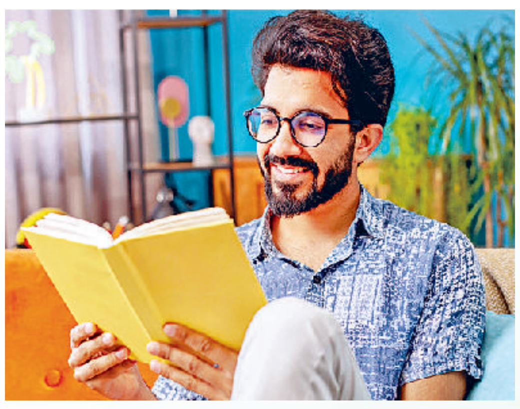

किताबों से बढ़ती दूरी की पृष्ठभूमि में यूनेस्को की कोशिश है कि लोग किताबों को खोलें, उन्हें पढ़ें, उनमें अपनी दिलचस्पी बढ़ाएं और ज्ञानी बनें, क्योंकि किताबों से बढ़कर कोई पक्का दोस्त नहीं होता। किताबें पीढ़ियों के बीच में और संस्कृतियों के बीच में पुल का काम करती हैं। इसी तथ्य को मान्यता प्रदान करने के लिए यूनेस्को यानी संयुक्त राष्ट्र संघ हर साल 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस मनाता है।

इस वर्ष के लिए चयनित पुस्तक राजधानी

हर साल इस जश्न को मनाने के लिए यूनेस्को व पुस्तक उद्योग के मुख्य सेक्टर्स- प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालयों का प्रतिनिधित्व करने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठन मिलकर विश्व पुस्तक राजधानी का चयन करते हैं। चुना हुआ शहर सभी आयु वर्गों और सभी समाजों में किताबों और पढ़ने की संस्कृति को प्रोत्साहित करता है, न सिर्फ मेजबान देश में बल्कि पूरे विश्व में। यूनेस्को ने अब तक 26 विश्व पुस्तक राजधानियां घोषित की हैं, जिनकी शुरुआत 2001 में मेड्रिड (स्पेन) से हुई थी। इस वर्ष 2026 की पुस्तक राजधानी रबात (मराकश) को चुना गया है। रबात में मेन फोकस, संस्कृतियों को जोड़ने में पुस्तकों की भूमिका पर होगा। इसके अलावा इस वर्ष पुस्तक दिवस का फोकस पढ़ने के साथ साक्षरता पर भी है, जिसमें पढ़ने के घंटे को भी प्राथमिकता दी गई है। आमतौर से शाम को 7 से 8 बजे तक का समय किताब पढ़ने के लिए मुफीद माना जाता है। यानी रोजाना कम से कम एक घंटा किताब पढ़ने की प्रवृत्ति विकसित की जाए, इस पर फोकस किया जा रहा है।

नई चुनौतियां भी कम नहीं

इसके अतिरिक्त इस बात पर भी गंभीर चर्चा हो रही है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की लेखकों के लिए प्रकाशन और कॉपीराइट सुरक्षा में क्या भूमिका होनी चाहिए? यह गंभीर विषय है और पेचीदा भी। एआई कॉपीराइट की परवाह किए बिना किसी के भी कार्य को सार्वजनिक करने की क्षमता रखती है, जिससे लेखकों व प्रकाशकों को नुकसान की आशंका रहती है। लेकिन एआई को नियंत्रित करना भी आसान नहीं है। फिर भी कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही होगा। *

कॉपीराइट सुरक्षा पर भी केंद्रित है यह दिवस

इस दिवस को मनाने का उद्देश्य कॉपीराइट सुरक्षा को भी प्रोत्साहित करना होता है, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है। भारत में कॉपीराइट सुरक्षा 1957 के कॉपीराइट कानून से संचालित होती है, जिसके तहत स्वतः ही मूल साहित्य, नाटक, संगीत, सिनेमेटोग्राफ फिल्म्स/साउंड रिकॉर्डिंग्स सुरक्षित हो जाती हैं। सुरक्षा के लिए पंजीकरण आवश्यक नहीं है, लेकिन विवाद की स्थिति में प्रथम दृष्टया इसे साक्ष्य माना जाता है। कॉपीराइट सुरक्षा आमतौर से लेखक के जीवनकाल और उसके बाद अतिरिक्त 60 वर्षों तक लागू रहती है। यह 60 साल लेखक की मृत्यु के दिन से गिने जाते हैं। कानूनी साक्ष्य के लिए पंजीकरण करा लेना चाहिए, भले ही वह वैकल्पिक हो। इसके लिए कॉपीराइट ऑफिस में अप्लाई करना होता है। फोटोग्राफ, फिल्म, साउंड रिकॉर्डिंग, अज्ञात व सरकारी कार्य का कॉपीराइट प्रकाशन के बाद 60 वर्षों तक रहता है। इस दौरान लेखक को एक्सक्लूसिव अधिकार होता है, अपने कार्य के पुनः प्रकाशन, कापियां जारी करने, परफॉर्म करने, अनुवाद करने या एडॉप्ट करने का। कॉपीराइट उल्लंघन की स्थिति में दोनों दीवानी (मुआवजा), आपराधिक सजा (6 माह से 3 वर्ष की कैद और जुर्माना) का प्रावधान है। सेक्शन 52 के तहत कॉपीराइट उल्लंघन के अपवाद हैं जैसे निजी प्रयोग, शोध, आलोचना, समीक्षा या रिपोर्टिंग।